ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी, टाटा स्टील फाउंडेशन के अंतर्गत हाशिये पर आ चुके समुदायों विशेषतः अनुसूचित जनजाति के लिए ही कार्यरत इकाई है। यह एक अव्यवसायिक और स्वंयसेवी संगठन है। ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी की यात्रा 1974 में तब शुरू हुई जबकी इसके जनजातीय मामलों के लिए एक संयुक्त समिति के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। वर्ष 1983 में समिति पंजीयन अधिनियम के तहत इसका एक समिति के रूप में पंजीयन कराया गया । टाटा ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी का मुख्य उद्देश्य जनजाति अस्मिता और धरोहर को प्रोत्साहित करना है। यह जनजातीय जीवन, संस्कृति तथा अजीविका के विभिन्न पक्षों में आर्थिक पहल के जरिए जनजातीय कला और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन से सम्बद्ध गतिविधियों पर केन्द्रित है।

कार्य के प्रमुख क्षेत्र है :-

- जनजातीय समुदायों की देशज अस्मिता या मौलिक पहचान का संरक्षण और संवर्धन।
- सशक्त समाजो के निर्माण हेतु शिक्षा को विशेषतः युवाओं के मध्य प्रोत्साहित करना।
- कौशल विकास के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को रोजगार हेतु प्रोत्साहित करना।

Address :-

In association with

TRIBAL CULTURE SOCIETY, JAMSHEDPUR
(An Ethnicity wing of TATA STEEL FOUNDATION)

E.Road Northen Town Bistupur
Jamshedpur - 831001 (Jharkhand)
Contact No : +918579015646
jiren.topno@tatasteel.com
shiv.kandeyong@tatasteelfoundation.org

TATA STEEL FOUNDATION **TATA**

कुड़ुख़ टाइम्स

(अंक 18, जनवरी से मार्च 2026)

वेब पत्रिका का त्रैमासिक मुद्रित संस्करण

Kurukhtimes.com

भाषा सप्ताह विशेषांक

[illegible]
कुँड़ुख़ टाईम्स

https://kurukhtimes.com

वेब वर्जन पत्रिका का त्रैमासिक संस्करण (भाषा सप्ताह विशेषांक)

(अंक 18, जनवरी से मार्च 2026)

Consulting Editor :
Mr. Kishlaya, Ranchi
Mob. - 9431113111

Executive Editor :
Smt. Subha Oraon, Ranchi
Mob - 82968 82215

Editor :
Dr. Bindu Pahan, Birsa Nagar, Jamshedpur, Mob. - 97989 56544

Coordinator :
Dr. Narayan Oraon, Sainda, Sisai, Gumla, Mob. - 9771163804

Editorial Board :
1. Shri Saran Oraon, Hehal, Ranchi Mob. - 99055 70243
2. Shri. Ranthu Oraon, Ranchi Mob. - 62005 00916
3. Shri Bipta Oraon, Jogo Pahar, Ranchi, Mob. - 9798956544
4. Mr. Mahadeo Toppo, Ranchi Mob. - 7250212369
5. Shri Bhuneshwar Oraon, Tilsiri, Ghaghra, Gumla, Mob # 9798956544
6. Dr. Satyotam Bhagat, Jamshedpur Mob. - 9608706239
7. Dr. Narayan Bhagat, Ranchi Mob. - 8521458677

Publication Office :
Tolong Pinnda, Boreya Road, Chirondi, Nagra Dippa, PS: Bariatu, Dist. : Ranchi (Jharkhand), Pin: 834006

Publiced by :-
Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya Parha Akhra (Addi Akhra), Ranchi

Prepared by :-
Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya Parha Akhra (addi Akhra), Ranchi

In association with
TRIBAL CULTURAL SOCIETY JAMSHEDPUR
An Ethnicity Wing of
TATA STEEL FOUNDATION

तरपाँती – पईत्त पाब – पक्खे

1. तोलोंग सिकि (लिपि) का आधार (प्रकृति और कलाकृति) – 02
2. कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि तोड़पाब (वर्णमाला) – 03
3. धरमे ओहमा – 04
4. कुड़ुख़ समुदाय भाषाई पुनरुत्थान, सांस्कृतिक विरासत एवं सामाजिक सशक्तिकरण पर विस्तृत रिपोर्ट – 05
5. तोलोङ सिकि की प्रतिस्थापना : एक सामाजिक सह सांस्कृतिक धरोहर – 07
6. धुमकुड़िया प्रवेश दिवस 2026 ग्राम : सैन्दा, सिसई के अवसर पर – 10
7. गुमला जिला कुँड़ुख़ कत्थ तोलोङ सिकि सप्ताह दिवस 2026 – 13
8. लोहरदगा जिला कुँड़ुख कत्थ तोलोङं सिकि सप्ताह दिवस 2026 – 15
9. साउथ दिनाजपुर कुँड़ुख़ कत्थ तोलोङं सिकि सप्ताह दिवस 2026 – 17
10. रोहतास–कैमूर कुँड़ुख़ कत्थ तोलोङं सिकि सप्ताह दिवस 2026 – 18
11. कुँड़ुख़ कत्थ तोलोङं सिकि सप्ताह दिवस 2026 कोलहान में सम्पन्न 9– 19
12. बुढ़ीपाट, भरनो, कुँड़ुख़ कत्थ तोलोङ सिकि सप्ताह दिवस 2026 – 21
13. रांची जिला कुँड़ुख़ कत्थ तोलोङ सिकि सप्ताह दिवस 2026 – 22
14. कुड़ुख़ तोलोङ सिकि : एक आदिवासी गांव से यूनिकोड तक – 23
15. झारखण्डी साहित्यकारों को ''झारखण्ड साहित्य अकादमी सम्मान'' – 28
16. रूढ़ीप्रथा पद्दा पड़हा बिसुसेन्दरा, सिसई–भरनो (कार्यशाला रिपोर्ट) – 29
17. kurukhtimes.com बेबसाईट का पुनः–प्रस्तुति अंतराष्ट्रीय महिला दिवस 2026 के अवसर पर – 32

I. [illegible] (पेंच्छका = संपादकीय)

[illegible]

[illegible]

Dated - 10.03.2025 *- Bindu Pahan, E. Editor*

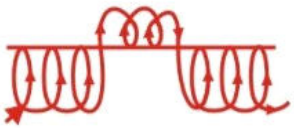

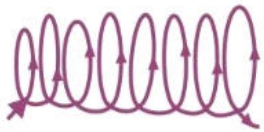

तोलोङ सिकि (लिपि) का आधार

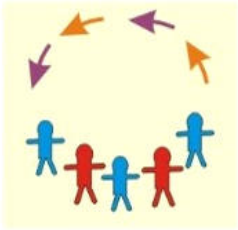

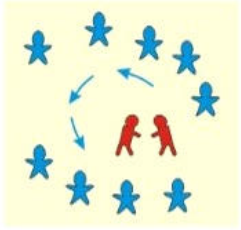

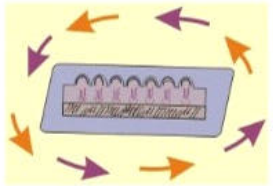

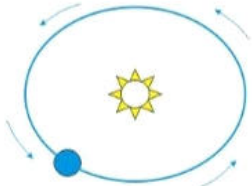

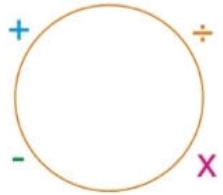

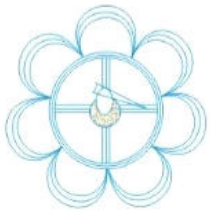

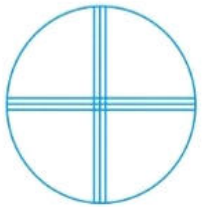

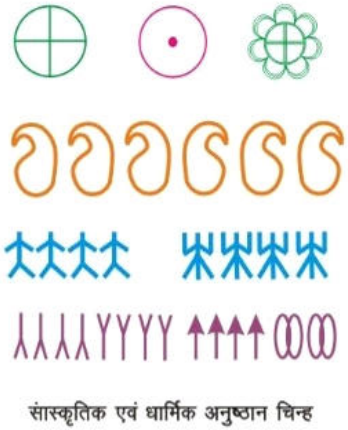

तोलोङ सिकि (लिपि) : आदिवासी भाषा, संस्कृति, रीतिरिवाज, परम्परा, विज्ञान एंव आध्यात्म का अद्भूत प्रस्तुतिकरण

२. (कुँडुख़ तोलोङ सिकि तोःड़पाब)
Tolong Siki Alphabet / तोलोङ सिकि वर्णमाला

(सरह तोड़) = स्वर वर्ण (Vowels)

इ i   ए e   उ u   ओ o   अ a   आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, • (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ' (घेतला) = शब्दखण्ड सूचक,
~ (एवाँ) = नासिक्य स्वर सूचक, ‿ (रेवाँ) = लुप्ताकार र, । (हेचका) = व्यंजन अ़

(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण (Consonants)

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् ch	छ् chh	ज् j	झ् jh	ञ् ñ
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् w	ज़् ż
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

(लेक्खा) = संख्या, Numerals

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

(ख़द्दर ही कत्थ लूर अरा कत्थ बेयाँख़ो) = बच्चों का भाषा ज्ञान और भाषा विज्ञान

(पा), (बा), (मा), (ता), (दा), (ना), (का), (गा), (जा),
(पपा) = रोटी, (बबा) = पिताजी, (ममा) = Cooked rice, भात।
(पल्ले) = दाँत, (बई) = मूँह, (मेलख़ा) = Epiglottis, उप कण्ठ।
(ततख़ा) = जीभ, (दुदु) = दूध, (नरटी) = Oesophagus, ग्रासिका।

ता:का एमसा:र'ई, पल्ले, बई, मेलख़ा, होलेम चीं:ख़नर ख़द्दर।
ततख़ा, दुदहिन, नरटी तरा तईयी, होलेम उज्जनर ख़द्दर।।
(कुडुख़ भाषा, संस्कृति, समाज, प्राकृतिक अवदान तथा भाषा विज्ञान का अद्भुद संगम)

[illegible] - जय धरमे

[illegible]
जय धरमे

[illegible]
जय धरमे

[illegible]

अना उङ्गु, उरमिन् उङ्गु, सिरिज'उ पोःस'उ,
मया ननु, धरमे उरबय्, धरती अयंग, धरमी सवंग्,
मय्हदेव्–परबईत्, करम देव, चन्नदो–बीःड़ी, चाःला अयंग्,
देबी अयंग्, पचबल् पुरखर्। अख़आ बल्ला, सुमरारआ
लगदम्, गोहरारआ लगदम्, ओहारी ननके, मलदव् ती
बछाबअ़के, दव् लूर् घोख् चिअ़के दरा जिया–कया
एम्हयन् उःख़ा ती बिल्ली तरा होअर्, पोलना ती
ओंग्गना तरा होअ़नुम, धरम् डहरेन् धरताअ़के।
ओलग्गादम् – ओ'लग्गी, ओ'लग्गी, ओ'लग्गी।

भावार्थ – अना उङ्गु (हे सामर्थ्यवान), उरमिन उङ्गु (सर्वशक्तिवान), सिरिज'उ पोःस'उ (सृजनकर्ता–पालनकर्ता), मया ननु (मया–दया करने वाले), धरमे उरबय् (हमारे स्वामी ईश्वर), धरती अयंग् (धरती माता), धरमी सवंग् (ईश्वरीय शक्तियाँ), मय्हदेव्–परबईत् (मयहा देव/माःह'उ देव/संधारण एवं संचरण करने वाले, परबस्ती/लालन–पालन करने वाली माता), करम–देव (करम देव्), चन्ददो–बीःड़ी (चांद–सूरज), चाःला अयंग (चाःल चि'उ अयंग/सरना माय), देबी अयंग् (दव् ननु मेःद् मलका अयंग), पचबल् पुरखर् (पूर्वज गण)। अख़आ–बल्ला (जाने–अनजाने), सुमरारआ लगदम् (सुमिरण कर रहे हैं), गोहरारआ लगदम् (गुहार लगा रहे हैं), ओहारी ननके (हमें अपनी छत्र–छाया प्रदान करें), मलदव् ती बछाबअ़के (बुराई से बचाएँ), दव् लूर–घोख् चिअ़के (अच्छाई का ज्ञान–मार्ग की शक्ति दें) दरा (और) जिया–कया एम्हएन् (हमारे आत्मा एवं शरीर को), उःख़ा ती बिल्ली तरा होअर् (अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाकर), पोलना ती ओंग्गना तरा होअ़नुम (असमर्थता से समर्थता की ओर ले जाते हुए), धरम् डहरेन् धरताअ़के (धर्म के रास्ते का अनुशरण करावएँ)। ओलग्गादम् (प्रणाम कर रहे हैं) – ओलगी (प्रणाम), ओलगी (प्रणाम), ओलगी (प्रणाम)।

4. कुडुख़ समुदाय भाषाई पुनरुत्थान, सांस्कृतिक विरासत एवं सामाजिक सशक्तिकरण पर विस्तृत रिपोर्ट

— डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो

1. प्रस्तावना और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि —

कुडुख़ (उरांव) समुदाय भारत की एक ऐसी आदिम नष्षंविज्ञान पहचान है, जिसका इतिहास गौरव, संघर्श और निरंतर प्रवास का मिश्रण रहा है। इस समुदाय की ऐतिहासिक जड़ों और दक्षिण से उत्तर भारत की ओर उनके विस्थापन का प्रमाणिक विवरण श्री योगेश्वर उरांव (असम राज्य वित्त सलाहकार) की शोधपरक पुस्तक ''उरांवों के दक्षिण से उत्तर भारत की यात्रा'' में विस्तार से मिलता है। इस यात्रा क्रम में ''रोहतासगढ़'' मात्र एक भौगोलिक स्थान या किला नहीं है, बल्कि यह उरांव समुदाय की सामाजिक–राजनीतिक चेतना का उपरिकेंद्र (Epicenter) और उनकी अटूट वीरता का प्रतीक है। ऐतिहासिक षोध ों के अनुसार, रोहतासगढ़ उरांवों की प्राचीन व्यवस्था और उनके गौरवषाली अतीत का वह आधार स्तंभ है, जहाँ से उनकी सांस्कृतिक अस्मिता को एक निश्चित आकार मिला।

2. भाषाई विकास और तोलोंग सिकि लिपि —

* कुडुख़ समुदाय की भाषाई अस्मिता को पुनर्जीवित करने के लिए ष्तोलोंग सिकिष लिपि का विकास एक क्रांतिकारी कदम सिद्ध हुआहै। वर्तमान में इस लिपि के माध्यम से भाशाई पुनरुत्थान के प्रयास निम्नलिखित महत्वपूर्ण चरणों में देखे जा सकते हैंरू

* तोलोंग सिकि के जनक और सम्मानरू लिपि के प्रवर्तक डॉ. नारायण उरांव को उनके अतुलनीय योगदान हेतु 21 फरवरी 2026 को ष्अंतर्राश्ट्रीय मातृभाशा दिवसष के अवसर पर प्रेस क्लब, रांची में ष्झारखंड साहित्य अकादमी पुरस्कारष से विभूषित किया गया। यह सम्मान न केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि तोलोंग सिकि की आधिकारिक स्वीकार्यता का परिचायक भी है।

* शैक्षणिक मानकीकरण की मांगरू उच्च षिक्षा के क्षेत्र में तोलोंग सिकि को स्थान दिलाने हेतु कार्तिक उरांव आदिवासी कुडुख स्कूल, मंगलो, सिसई के प्रधानाध्यापक और 9+7+6 पड़हा (22 गाँव) के प्रतिनिधियों द्वारा बी.एन. जालान महाविद्यालय, सिसई में कुडुख़ भाषा की पढ़ाई इसी लिपि के माध्यम से कराने की मांग पुरजोर तरीके से की गई है।

* संस्थागत सुदृढ़ीकरण — टाटा स्टील फाउंडेशन के सहयोग से संचालित बलसोता केंद्र जैसे तोलोंग सिकि सह कुडुख़ भाशा शिक्षण केंद्र जमीनी स्तर पर बच्चों को अपनी लिपि से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं।

* राष्ट्रीय समन्वय, कुडुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा झारसुगुड़ा, ओड़िशा में आयोजित 18वां राष्ट्रीय अधिवेषन इस बात का साक्ष्य है कि यह आंदोलन अब एक अखिल भारतीय स्वरूप ले चुका है।

* JAC के साथ ऐतिहासिक संघशर्रू झारखंड अधिविद्य परिषद (JAC), रांची में तोलोंग सिकि की मान्यता और विकास हेतु संघर्श का इतिहास काफी पुराना है। इसका विधिवत प्रयास वर्ष 2008 में प्रथम आवेदन समर्पित करने के साथ ही प्रारंभ हो गया था, जो समुदाय की भाषाई दृढ़ता को दर्शाता है।

3. सांस्कृतिक उत्सव और मान्यताएँ —

कुडुख़ समुदाय का सांस्कृतिक ढांचा प्रकृति और इतिहास के प्रति उनकी गहरी निश्ठा पर टिका है।

सरहुल (Sarhul) —

* सरहुल झारखंड का सर्वाधिक जीवंत वसंत उत्सव है, जो न केवल नव वर्श का स्वागत है, बल्कि प्रकृति और मानव के अटूट संबंध का उत्सव भी है। सांस्कृतिक नियमावली के अनुसार, यह उत्सव अनिवार्य रूप से तीन दिनों की अवधि तक मनाया जाता है, जिसमें पाहन और समुदाय मिलकर नए फूलों के आगमन और कृषि चक्र के प्रारंभ का स्वागत करते हैं।

सांस्कृतिक प्रतीक और ऐतिहासिक स्मृति —

रोहतासगढ़ के प्रति समुदाय का दृष्टिकोण मात्र एक पुरातात्विक स्थल का नहीं, बल्कि एक जीवंत ऐतिहासिक विरासत का है। यह स्थल उनके पूर्वजों के शौर्य और

प्राचीन गणतांत्रिक स्वशासन की स्मृतियों को संजोए हुए है, जो आधुनिक दौर में भी उनकी सांस्कृतिक अस्मिता को ऊर्जा प्रदान करता है।

4. सामुदायिक सषक्तिकरण और स्वशासन संरचना

कुड़ुख़ समुदाय की पारंपरिक स्वषासन व्यवस्था 'पड़हा' को आधुनिक न्याय शास्त्र के साथ समन्वित करने के गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं।

* पद्दा पड़हा नेवईपंच्चा (न्यायपंच नियमावली 2025) – ग्रामसभा पड़हा न्यायपंच नियमावली 2025 का निर्माण सामुदायिक स्तर पर न्याय सुनिष्चित करने की दिषा में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। यह नियमावली पारंपरिक नेवई (न्याय) को संवैधानिक मर्यादाओं के साथ जोड़ती है।

* कोटवार प्रषिक्षणरू TEAM (Tribal Education Awareness Management) धुमकुड़िया के नेतृत्व में समन्वयक (कोटवार) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। 23 नवंबर 2025 को रांची में आयोजित कार्यक्रम का मुख्य उद्देष्य सामुदायिक प्रबंधन में आधुनिक दक्षता लाना था।

* युवा चेतना शिविर, सराजपुर, सुंदरगढ़ (ओड़िशा) में आयोजित तीन दिवसीय ''आदिवासी सरना युवा प्रशिक्षण शिविर'' इस बात का प्रमाण है कि युवा पीढ़ी को नेतृत्व और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

5. दार्शनिक चिंतन और सामाजिक चुनौतियाँ –

कुड़ुख़ समुदाय के समक्ष वर्तमान में वैचारिक और भाशाई संप्रभुता को लेकर गंभीर चुनौतियां हैं, जिनका सार यहाँ प्रस्तुत है–

Key Insights : वि–उपनिवेशीकरण एवं भाषाई संप्रभुता ''औपनिवेषिक मानसिकता से मुक्ति – स्वाधीनता के 75 वर्षों के उपरांत भी 'अंग्रेजियत' का प्रभाव मानसिक रूप से बना हुआ है। समुदाय के बौद्धिक वर्ग का मानना है कि वास्तविक स्वावलंबन के लिए औपनिवेषिक गुलामी के इस वैचारिक ढांचे को तोड़ना अनिवार्य है।

* भाषाई संप्रभुता – कुड़ुख़ भाषा–सेवियों के अनुसार, भाषाई चुनौतियों का समाधान तकनीकी सुलभता और लिपि के मानकीकरण में निहित है। तोलोंग सिकि को डिजिटल युग के अनुकूल बनाना ही भविष्य की दिशा है।

' वि–उपनिवेषीकरण की आवश्यकता – औपनिवेषिक मानसिकता से मुक्ति केवल एक नारा नहीं, बल्कि समुदाय के भाषाई, सामाजिक और आर्थिक विकास की अनिवार्य शर्त है।

6. श्रद्धांजलि और प्रेरणापुंज (Obituaries) – कुड़ुख़ समुदाय ने हाल के दिनों में अपने उन महापुरुषों को खोया है जिन्होंने समाज की दिशा तय करने में अपना जीवन अर्पित कर दिया।

नाम परिचय एवं विशिष्ट योगदान –

डॉ. करमा उरांव प्रख्यात षिक्षाविद् एवं वरिष्ठ सामाजिक नेतृत्वकर्ता, सामुदायिक चेतना के प्रखर स्वर।

फूलमणि उरांव वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता एवं डॉ. नारायण उरांव की माता 85 वर्ष की आयु में निधन।

मंगरा उरांव, अद्दी कुड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, रांची के वरिष्ठ कर्मयोगी सदस्य, निधन तिथि 22.12. 2025।

गुरूजी समुदाय के परम श्रद्धेय व्यक्तित्व, जिनके महाप्रयाण पर संपूर्ण समुदाय शोकमग्न है।

7. निष्कर्ष – भविष्य की दिशा –

कुड़ुख़ समुदाय आज अपनी लिपि 'तोलोंग सिकि' अपनी न्याय प्रणाली ''पद्दा पड़हा नेवइ पंच्च–पचा'' और अपनी ऐतिहासिक पहचान 'रोहतासगढ़' के माध्यम से एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का नेतृत्व कर रहा है। शैक्षणिक ढांचों में तोलोंग सिकि की स्वीकार्यता और युवाओं में बढ़ती सामाजिक चेतना यह सुनिष्चित करती है कि यह समुदाय अपनी जड़ों को मजबूती से पकड़ते हुए आधुनिकता के साथ कदम मिलाने के लिए पूरी तरह तैयार है। वि–उपनिवेषीकरण की यह प्रक्रिया ही आने वाले समय में कुड़ुख़ समुदाय के सर्वांगीण सषक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त करेगी। **विभागाध्यक्ष, गोस्सनर कालेज, रांची।

5. तोलोङ सिकि की प्रतिस्थापना : एक सामाजिक सह सांस्कृतिक धरोहर

— फा. अगुस्तिन केरकेट्टा

आदिकाल से ही मानव समाज अपनी पारम्परिक वेषभूषा तथा सांस्कृतिक चिन्हों को संकेत के रूप में प्रयोग कर साहित्य निर्माण में अग्रेतर विकास किया है। प्रिंटिंग मीडिया से पहले आदिवासी समाज में शादी के निमंत्रण के लिए हल्दी रंगा हुआ अरवा चावल संकेत स्वरूप प्रदान करता था और आज भी आदिवासी गावों में प्रचलन में है। कुँडुख़ भाषी उराँव गांव—समूह में आज भी एक आम की डाली के साथ घुमने पर यह पूछा जाता है कि आप क्याा सूचना दे रहे हैं ? अर्थात आम की डाली को साथ समूह में घूमकर किसी बात की सूचना देने का संकेत था। प्राचीन काल में साज—सज्जा, श्रृंगार में वेषभूषा, संकेत एवं चिन्हों में जीवन प्रयुक्त व्यवहार कुषलता की पहचान पाई थी और प्रकृति का स्वरूप भी झलकता है। आदिवासी समुदाय, प्रकृति से जो सीखता है उसका अनुषीलन भी करता है क्योंकि प्रकृति षाष्वत गुरू है। जिन लोगों ने प्रकृति को आदर्ष के रूप में अपने जीवन में उतारा, उनमें से एक आदिवासी समुदाय भी है, जिन्होंने प्राकृतिक अवदानों को अपने System Custom Tradition में हु—ब—हु उतारा और षाष्वत स्वरूप देकर कायम भी किया। प्रकृति अपने आदर्ष को बरकरार रखते हुए नये—नये परिवर्त्तन करती है, जैसे ऋतु परिवर्तन के साथ ही स्वरूप भी उभर पड़ता है। यह प्राकृतिक सत्य है कि प्रकृति का चलन दायें से बायें (anti clockwise movement) की खाषियत होती है। आदिवासी पूर्वज इन गतिविधियों को अपने ज्ञान और जिज्ञासा का केन्द्र बनाया और प्रकृति से सीखकर अपने जीवन में उतारा। यह उसकी जीवनधारा बनी और अपनी संतानों को यह गुण हस्तांतरित किया। प्रकृति में प्रतिदिन ही एक नई खोज की ओर संकेत मिलता है। मौसमी नाच—गान बारहों महीनों के साहे डण्डी इसके द्योतक है। वो अनुकरणीय ही नहीं जीवन पर्यन्त मार्गदर्षक बन निरर्थक के सार्थक को निरंतरता प्रदान करता है। ऐसे ही परिवेष में तोलोङ सिकि (लिपि) को प्रतिस्थापित करने का यह प्रयास, अति विषिष्ट है। तोलोङ सिकि, तोलोङ को ऊपर से नीचे बांधने की प्रक्रिया में उभरती आकृति का एक प्रतीकात्मक स्वरूप है, जो मानवीय विचारों के आदान—प्रदान में हो रहे भाषायी उच्चारण के लिए एक संकेत रूप में प्रयोग है।

पेशे से चिकित्सक, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' ने अपनी मातृभाषा (Mother tongue) के सिर्फ मौखिक रूप के सरकारी मान्यता होने की परिभाषा को बदलने में और अपने सामाजिक तथा सांस्कृतिक धरोहर रूपी ज्ञान भंडार पर आधारित परिकल्पना को मूर्त रूप देते हुए एक नई लिपि को प्रतिस्थापित करने में एक रचनाकार का कार्य किया है। इस नई लिपि का नाम है — 'तोलोङ सिकि'। वर्तमान में इस लिपि की मान्यता कुँडुख़ भाषा की लिपि के रूप में झारखण्ड तथा प0 बंगाल सरकार में है।

उन्होंने इस विषय पर शोध—रचना का कार्य अपने छात्र जीवन में दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय, लहेरियासराय (बिहार) में वर्ष 1989 में आरंभ किया। एक लिपि के रूप में सर्वप्रथम वर्ष 1993 में सामाजिक प्रदर्षनी तथा समाचार पत्रों के माध्यम से समाज के बीच पहूँचा। इसपर लगातार शोध—संकलन करते हुए वर्ष 1998 में तत्कालीन भाषाविद, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर (भारत सरकार) के प्रोफेसर डॉ. फ्रांसिस एक्का एवं भाषाविद डॉ. रामदयाल मुण्डा के उच्च स्तरीय कमिटि के साथ मार्ग दर्षन प्राप्त किया गया। तत्पष्चात वर्ष 1999 में सार्वजनिक रूप से समाज के लोगों के लिए लिखने—पढ़ने हेतु समर्पित किया गया। इस विषय पर झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची में वर्ष 1998 में एक राजकीय कार्यषाला आयोजित हुई तथा वर्ष 2003 में झारखण्ड सरकार ने तोलोंग सिकि को कुँडुख़ भाषा की लिपि की घोषणा की और केन्द्र सरकार को अपना अनुमोदन भेजा। इसके आलोक में झारखण्ड अधिविद्य परिषद राँची ने वर्ष 2009 में एक विद्याालय को तथा वर्ष 2016 से सभी विद्यालयों के छात्रों के लिए कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि, लिपि में लिखने की अनुमति दी गई। वर्तमान में गुमला, लोहरदगा, राँची आदि जिला के कुँडुख़ भाषी क्षेत्रों में समाज द्वारा चलाये जा रहे कई विद्यालयों के माध्यम से भाषा—लिपि की पढ़ाई—लिखाई हो रही है।

मैं इस लिपि के प्रचार–प्रसार में वर्ष 1998 में षामिल हुआ और अबतक अपनी भागीदारी निभा रहा हूँ। आरंभिक दौर में मुझे भी अपनी मातृभाषा के विकास के लिए एक नई लिपि की आवष्यकता एवं उपयोगिता विषय पर गहन चिंतन–मंथन करने की जद्दोजहद झेलनी पड़ी। पर इस निर्णय से मुझे खुषी है कि मैं भी इस सामाजिक भागीदारी का हिस्सा हूँ। वर्ष 2009 में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि, लिपि में लिखने की अनुमति मिलने के समाज एवं सरकारी विभाग के बीच बातचीत करने वाले टीम का मैं भी एक सदस्य रहा। राज्य में उस समय राष्ट्रपति शासन था। जैक के पदाधिकारियों का निर्देष था कि नई लिपि में परीक्षा लिखने की अनुमति के लिए इस नई लिपि में पाठ्य पुस्तक होना आवष्यक है। जैक द्वारा वैसा निर्देष दिये जाने तक में सिर्फ देवानागरी लिपि में पाठ्य पुस्तक उपलब्ध था। समाज के सामने एक कठिन चुनौति थी – पहला, अपनी मातृभाषा के साहित्य को सरकार के तराजू में खरा उतारना और दूसरा, स्कूल के बच्चों का भविष्य सँवारना। यह कठिन था कार्य था पर असंभव नहीं। एक ओर राँची से 150 कि0मी0 दूरी पर लूरडिप्पा, डुमरी विद्यालय के छात्र और दूसरी ओर, राँची से 200 कि0मी0 दूर गया (बिहार) में लिपि के विषेषज्ञ डॉ. नारायण उराँव की पदस्थापना। किताब के लिए राँची के प्रिंटिंग प्रेस तक पहूँचाने में एक संयोजक की भूमिका मेरे लिए हमेशा यादगार रहेगा। विपरीत परिस्थिति में तथा कम समय में लिप्यन्तरण कर पुस्तक को सामाजिक चिंतकों के साथ जैक तक पहूँचाया गया और तब 20 फरवरी 2009 को तोलोंग सिकि, लिपि में परीक्षा लिखने की अनुमति की सूचना सार्वजनिक हुई।

इस लिपि के प्रचार–प्रासार हेतु कुछ संस्थागत कार्य भी हो रहे हैं। इन कार्यों में से वर्ष 2010 में *अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा,* नामक संस्था का गठन किया गया। इस सभा के अध्यक्ष पद का जिम्मा मुझे सौंपा गया और लगातर मैं अपनी जिम्मेदारी निभा रहा हूँ। महासचिव स्वंय डॉ. नारायण उराँव ने संभाला और एक टीम कार्य भावना से देश के कोने–कोने में भाषा एवं लिपि की बातें कुँड़ुख़ भाषियों तक पहुँचाने लगे। एक चिकित्सक होने के चलते कई बार *कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया* के राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. नारायण नहीं पँहुच पाये वहाँ मैं एक अध्यक्ष के नाते लोगों तक भाषा–लिपि के तथ्यों को समाज के लोगों के सामने रख पाया। वर्तमान में भी जहाँ जरूरत होती है, वहाँ कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि के प्रचार–प्रसार हेतु समय निकाल कर लोगों के समक्ष इससे संबंधी बातें रखने का प्रयास किया जाता है।

कुँड़ुख़ समाज में एक दुधमुँहे बच्चे को भाषा सिखाने की अद्भुत परम्परा है। चिकित्सा विज्ञान मानता है बच्चा सबसे पहले 6वें महीने तक एक आक्षरिक शब्द सीखता है, जैसे पा..., बा..., मा.... आदि। फिर 9वें महीने तक द्वी आक्षरिक शब्द जैसे – पपा, बबा, ममा आदि। इसी तरह 1वर्ष होते–होते कुछ शब्दों को अर्थ सहित सीख लेता है। कुँड़ुख़ समाज में भी बच्चे को आसान शब्द सिखलाने के क्रम में रोटी को दिखा कर – पपा, भात को दिखा कर – ममा, बोलने के लिए बतलाया जाता है। इसी तरह बच्चे की माँ, बच्चे के पिता को दिखाकर – बबा, बोलने के लिए बतलाया करती है। परन्तु वयस्क लोगों की भाषा में रोटी को असमा, भात को मण्डी तथा पिताजी को बा या बबा कहा जाता है। इस तरह छोटे बच्चे को आसान षब्द सिखलाने हेतु कुँड़ुख़ समाज में भी अपनी एवं अलग विधा है। इन सामाजिक पहलुओं तथा भाषा विज्ञान के तथ्यों के अधार पर तोलोंग सिकि वर्णमाला को स्थापित किया गया है जो सामाजिक स्वीकार्यता को बल प्रदान करता है। इन्हीं सब कई तथ्यों को आधार, मानकर व्यंजन वर्णों का आरंभ प, फ, ब, भ, म से किया गया है।

इसी तरह स्वर वर्ण का क्रम इ ए उ ओ अ आ की तरह स्थापित किये जाने का अपना स्वतंत्र आधार है। इस संबंध में तोलोंग सिकि का उद्भव और विकास पुस्तक में इ ए उ ओ अ आ रखे जाने का आधार बतलाया गया है। इस तर्क से मैं भी सहमत हूँ। एक बच्चा जन्म के बाद सबसे अधिक नजदीक माँ के साथ रहता है। मेरी माँ कहे जाने को कुँड़ुख़ भाषा में इंग्गयो कहा जाता है, जो इंग्गयो से इ का अटूट संबंध को बतलाता है। इसी तरह मेरे पिता कहे जाने को कुँड़ुख़ भाषा में एम्मबस कहा जाता है, जो एम्बस से ए को संबंध प्रगाढ़ बनाता है। माँ–बाप मिलकर ईश्वरीय शक्ति को बतलाया करते हैं। ईश्वर को उरबस भी कहा जाता है, जो उरबस से उ का संबंध स्थिति पत चलता है। माँ–बाप के अतिरिक्त सगे–संबंधी भी हैं। सगे–संबंधी को ओरमत कहा जाता है। ओरमत से ओ का

संबंध स्थिति पता चलता है। इसी तरह अद्दी आःलो का अर्थ तमाम मानवेतर जीव–जन्तु एवं प्राकृतिक चीजें। अद्दी आःलो से अ एवं आ ध्वनि संकेत का द्योतक है। कुँड़ुख़ परम्परा भाषा–संस्कृति में रमें हुए लोग इन प्राकृतिक अवदानों के बीच बखुबी जीते और निर्वाह करते हैं। इस तरह स्वर वर्णों को इस प्रकार समझें :–

इंग्गयो – ती – इ,	एम्मबस – ती – ए
उरबस – ती – उ,	ओरमत – ती – ओ
अद्दी – ती – अ,	आलोद् – ती – आ

बच्चे के लिए इस प्रकार का उच्चारण करना और दुहराना या पुनरावृत्ति को सहज सुलभ करने के लिए युक्ति संगत, सहज बोध और व्यावहारिक हो और सुनकर तथा समझकर पुकार उठे –

इंग्गयो मदहे – इ,	एम्बस मदहे – ए
उबरस मदहे – उ,	ओरमत मदहे – ओ
अद्दी मदहे – अ,	आलोद मदहे – आ

इन तथ्यों पर डॉ0 नारायण उराँव ने अपनी पुस्तक ''तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास'' प्रकाशित संस्करण : 2003 (पृष्ठ 164) में स्पष्ट किया है। उनका मानना है जिस तरह बच्चा जन्म के बाद सबसे अधिक मां के साथ रहता है। मेरी मां के लिए कुंडुख़ में इंग्गयो षब्द है। मां के बाद, एम्बस (मेरे पिता) के साथ, फिर मां–पिता उरबस (ईष्वर) को बतलाते हैं, फिर ओरमत (सभी), फिर अद्दी–आःलोद अर्थात प्रकृति की आदि शक्तियाँ तथा मानवेतर जीव–जन्तु। इस तरह वर्णमाला क्रम – इ, ए, उ, ओ, अ, आ हुआ।

इस प्रकार, ऊपर लिखित स्वर वर्ण 6 (छः) की संख्या में हैं। वैसे, सिर्फ स्वर से, शब्द नहीं बनते। उसके लिए व्यंजन वर्ण का होना आवश्यक है। हमारे आदिवासी परम्परा में कोई भी कार्यक्रम का आरम्भ एक विधि–विधान से होता है जिस धार्मिक अनुष्ठान को डंडा–कट्टना कहते हैं। उसकी शुरूआत पल्लकांसना से होती है। यहीं से Custom, System, Tradition की पुष्टि होती है और शब्द के उच्चारण हेतु स्वर के साथ व्यंजन की पहचान स्वतः विद्यमान हो उठता है –

पल्लकांसना	मदहे	प
फग्गु	मदहे	फ
बईसाख	मदहे	ब
भाख (खण्डना)	मदहे	भ
माघ	मदहे	म

गुट्ठी।

अतएव अपने पूर्वजों, माता–पिता एवं धर्मेस को हमलोग सबकुछ समर्पित करें जो उनकी दवले ओहमा को याद करें और गुनगुनाएँ है –

इंग्गयो एम्बस उरबस नु
दवले ओहमा दवले ओहमा
धरमेस ओरे नंज्जस ओरमत गे – 2
धरमेस ओरे नंज्जस ओरमत गे – 2
धरमेस ओरे नंज्जस अद्दी नू – 2
बरा ओल्लग्गा – 2
ओरमा आलत आलोद नाम
बरा पल्लकाँसा ओरमा आःलत
आलोद नाम
बरा भाख खण्डा ओरमा आलत आलोद नाम
बरा डण्डा–कट्टा ओरमा मालत आलोद
नाम, ओरमा आलात आलोद नाम – 3

इस प्रकार दवले ओहमा पूरखों (पूर्वजों) से आशिष माँगने की एक प्रार्थना है। यही दवले ओहमा पूर्वजों को याद करने एवं श्रद्धांजलि चढ़ाकर उनसे बरकत पाने की धरोहर है। अब इस धरोहर को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित एवं हस्तांतरित करने की एक जोड़ बन गई जैसे कि स्वर और व्यंजन की 'संधि' बन कर ''दवले ओहमा'' में पल्लकासना, भाख खण्डा एवं डंडा–कट्टा अन्योन्याश्रय ही कुडुख़ संस्कृति की आध्यात्मिकता है। आध्यात्म की अभिव्यक्ति आदिवासी समाज में छोटे–बड़े प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कोई भी अनुष्ठान धार्मिक कार्यों के पहले सबसे बड़ी सौगात है।

इस तरह से उपरोक्त गीत, पद्य में व्यक्त अभिव्यक्ति से कथन सार्थक है कि भाषा, संस्कृति का वाहक है एवं संस्कृति भाषा का पोषक। इस गद्य में स्वर और व्यंजन द्वारा साहित्य निर्माण में भाषा–बोध का समन्वय प्रतिध्वनित एवं प्रतिविंबित है।

*****

6. धुमकुड़िया सैन्दा में धुमकुड़िया प्रवेश दिवस 2026 के अवसर पर

दिनांक 01.02.2026 दिन रविवार को ग्राम – सैन्3दा, थाना – जिला गुमला में धुमकुड़िया कोरना–पूरना (प्रवेश–विदाई) समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह में बच्चे, बड़े बच्चे एवं बड़े बुजुर्ग उपस्थित हुए। यह आयोजन प्रतिवर्ष माघ महीने के शुक्ल पक्ष में हुआ करता है। इस वर्ष यह आयोजन माध पूर्णिमा को रविवार के दिन दिनांक 01.02.2025 को ग्रामीणों के सहयोग से आयोजित हुआ।

तथ्य है कि प्राचीन काल से ही उरांव समाज में बच्चे के 7वें वर्ष में धुमकुड़िया प्रवेष कराया जाता था और विवाह के पूर्व उन लड़के–लड़कियों की धुमकुड़िया से विदाई की जाती थी। यहां उठते बैठते लोग सामाजिक जीवन जीने के तौर–तरीके सीखते थे। यह बीते हुए समय में समाज की जरूरतों के अनुसार हुआ करता था। पर आधुनिक समाज में अथवा समय के थपेड़े में अथवा दुनियां के विकास दौड़ की चकाचौंध में या वैश्विक दबाव में अपनी पहचान खो चुका है और वर्तमान में मिटने के कगार पर है। परन्तु अब नए दौर में वर्तमान सामाजिक आवश्कताओं के आधार पर गांव के पढ़े–लिखे एवं साक्षर लोग धुमकुड़िया लूरगढ़िया यानी प्रशिक्षक के रूप में सेवा देते हैं। नए नामांकन वाले गीत– कविताएं– कहानियां और अन्य गतिविधियों को सीखना आरंभ करते हैं। सामाजिक जागरूकता के फलस्वरूप ग्राम सैन्दा थाना सिसई गुमला में पिछले एक दशक से माघ मास में धुमकुड़िया कार्यक्रम किया जा रहा है।

इस धुमकुड़िया कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए वर्तमान में अद्दी कुड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, रांची ओ बढ़कर टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर के सहयोग से धुमकुड़िया में कुड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि की पढ़ाई लिखाई कराये जाने हेतु प्राथमिक पुस्तक एवं पाठ्य सामग्री तैयार किया जा रहा है। इसका प्रभाव अब दिखने लगा है। लोग अपनी भाषा लिपि में लिखने पढ़ने का कार्य करने लगे हैं। ऐसा होने से नई पीढ़ी अपनी आदिवासी पहचान एवं परंपराओं के प्रति गर्व महसूस करेगा।

धुमकुड़िया दिवस का शुभारंभ गांव की देवी माता या देवीगुड़ी की परिक्रमा कर गोहराते हुए आरंभ किया गया। देबीगुड़ी में नेग–दस्तुर के बाद अखड़ा का परिक्रमा किया गया। उसके बाद सभी बच्चों के साथ धुमकुड़िया में प्रवेश किये। बाद में ग्रहण के बाद मंच का संचालन सैन्दा ग्राम के श्री जुगेश्वर उरांव द्वारा किया गया। धुमकुड़िया सैंदा में सीख रहे बच्चों ने धुमकुड़िया कत्थडण्डी प्रस्तुत किया। बीते वर्ष से ही पेल्लो मंक्खना समारोह की शुरुआत की गई है। जिसमें विशेषकर किशोरी अवस्था में प्रवेष करने वाली लड़कियां का नेग–अनुश्ठान किया जाता है। उन्हें उरांव समुदाय की वीरांगनाओं की तरह गुण विकसित करने, आत्मविश्वास, आत्मरक्षा और सामाजिक दायित्व सीखने की संदेष दी जाती है। धुमकुड़िया प्रवेष के बाद बच्चों को उपहार में पढ़ने–सीखने की सामग्री भी दी गई। इस दिन के समारोह के लिए बिहरी करके भोजन व्यवस्था की गई जिसमें प्रति घर से सहयोग लिया गया। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि सामुहिकता का बल से चुनौतियां स्वीकार कर सामाजिक दायित्व पूरा किया जा सकता है। इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य अपनी सांस्कृतिक धरोहर एवं विराषत को अगली पीढ़ी तक पहूंचाना है।

वहां उपस्थित बुद्धिजीवीयों ने युवाओं की वर्तमान स्थिति पर चिंता जताई कि किस प्रकार लोग पारिवारिक दायित्व के साथ सामाजिक दायित्व के साथ लापरवाही बरत रहे है। डॉ नारायण उरांव, पेशे से चिकित्सक होकर भी अपने पैतृक गांव के इस समारोह में जरूर शामिल होते हैं और उरांव समुदाय के अपने पारंपरिक रूढ़िगत व्यवस्था के प्रति नियमित रूप से जनजागरण में लगे रहते हैं तथा सैंदा गांव की तरह संपूर्ण कबिले को सशक्त बनाने में हरसंभव प्रयास करते हैं। वर्तमान समय की जरूरत कि हमलोग को विज्ञान और रूढ़िगत व्यवस्था का सामंजस्य करके सामाजिक जीवन जीने हेतु सभी मिलकर आगे बढ़ा जाए। इस अवसर पर ग्रामीणें में से श्री श्री पाथो पहान, श्री उमेश पुजार, श्री एवं गजेन्द्र उरांव, समेत सभी गांव वालों का महत्वपूर्ण सहभागिता निभायी।

राजी पड़हा, भारत एवं पादा पड़हा, ओड़िसा, झिरपानी, राउरकेला

"माह सितम्बर 2025 में कुड़ुख़ तोलोंग सिकि को यूनिकोड मिलने की खुशी में, कुड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोङ सिकि को राजी पड़हा, भारत एवं पादा पड़हा, ओड़िसा, अनुमोदित एवं स्वीकृत करती है तथा कार्यकारिणी समिति की सहमति से हम दोनों, एडवोकेट बागी लकड़ा, राजी बेल, राजी पड़हा, भारत एवं बिरुवा उरांव, पादा देवान, पादा पड़हा, ओड़िसा, आदिवासी उराँव समाज, संस्कृति, साहित्य तथा पारम्परिक ज्ञान–विज्ञान के विकास के उद्देश्य से तथा पूरे देश–दुनियाँ तक पहुँचाने हेतु कुड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोङ सिकि को सामाजिक जनशिक्षा के माध्यम के रूप में लोकार्पित करते हैं। ज्ञात हो कि कुड़ुख़ की लिपि, तोलोंग सिकि के विकास की दिशा में राजी पड़हा, भारत से जनवरी 1997 से ही मार्ग–दर्शन मिलता रहा है। यूनिकोड उपलब्धि के बाद तोलोङ सिकि जनक डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं लिपि विकास अभियान के साथ जुड़े सभी बुद्धिजीवियों एवं समाजसेवियों को "राजी पड़हा, भारत" एवं पादा पड़हा, ओड़िसा की ओर से, हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बहुत–बहुत बधाई !!!"

Bagi Lakra — एडवोकेट बागी लकड़ा, राजी बेल, राजी पड़हा, भारत

Bijuwa Oraon — बिरुवा उराँव, पादा देवान, पादा पड़हा, ओड़िसा

तोलोङ सिकि वर्णमाला / Tolong Siki Alphabet

(सरह तोड़) = स्वर वर्ण (Vowel)

इ i — ए e — उ u — ओ o — अ a — आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, ˙(मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, '(घेतला) = शब्दखण्ड सूचक,
~ (एवाँ) = नासिक्य स्वर सूचक, _ (रेवाँ) = लुप्ताकार र, । (हेचका) = व्यंजन अ़

(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण (Consonant)

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् ch	छ् chh	ज् j	झ् jh	ञ् n̄
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् v	ज़् ż
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

(लेक्खा) = संख्या, Numerals

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

ख़द्दर गही कत्था सिखिरना लू:र अरा कत्थ बेयाँख़ो = बच्चों का भाषा ज्ञान और भाषा विज्ञान

(पा), (बा), (मा), (ता), (दा), (ना), (का), (गा), (ला).

(पपा) = रोटी, (बबा) = पिताजी, (ममा) = Cooked rice, भात।

(पल्ले) = दाँत, (बई) = मूँह, (मेलख़ा) = Epiglottis, उप कण्ठ।

(ततख़ा) = जीभ, (दुदु) = दूध, (नरटी) = Oesophagus, ग्रासिका।

ता:का एमसा:र'ई, पल्ले, बई, मेलख़ा, होलेम चीं:ख़नर ख़द्दर।

ततख़ा, दुदहिन, नरटी तरा तईयी, होलेम उज्जनर ख़द्दर।।

(कुड़ुख़ भाषा, संस्कृति, समाज एवं प्राकृतिक अभिदान तथा भाषा विज्ञान आधारित लिपि)

7. गुमला जिला कुड़ुख़ कत्थ तोलोङ सिकि लिपि सप्ताह दिवस 2026 सम्पन्न

सिसई प्रखण्ड स्थित शिवनाथपुर पंचायत के प्रस्तावित कुड़ुख़ उच्च विद्यालय शिवनाथपुर, सिसई, गुमला के स्कूल प्रांगण में दिनांक 13 फरवरी 2026 दिन शुक्रवार को धुमधाम से गुमला जिला कुँड़ुख़ कत्थ तोलोङ सिकि लिपि सप्ताह दिवस मानाया गया। ज्ञात हो कि गुमला जिला के इन भाषायी स्कूलों में चल रहे भाषा शिक्षण केन्द्र को टाटा स्टील फाउण्डेशन के सहयोग से संचालित किया जा रहा है तथा अद्दी कुड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, रांची संस्था इसमें सहयोग कर रही है।

इस कार्यक्रम का शुभारंभ, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पूर्वशिक्षा मंत्री श्रीमती गीताश्री उरांव के द्वारा आरंभ हुआ। उनके द्वारा बाबा कार्तिक उरांव के फोटो एवं अमर शहीद वीर बुधू भगत के चित्र पर मालयार्पण किया गया। उसके बाद अना अद्दी प्रार्थना किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न स्कूल के नृत्य मंडली शामिल होकर अपनी परंपरा की खुबसूरती को अखड़ा में प्रस्तुत किये। मौके पर प्रस्तावित कुँड़ुख उच्च विद्यालय शिवनाथपुर के प्रधानाध्यापक श्री सुकरु उरांव ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए लोगों के बीच अपनी मातृभाषा को बचाने के लिए सभी लोगों को कुँड़ुख भाषा पढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे थे। कुँड़ुख कत्थ तोलोंग सिकि सप्ताह दिवस में आये अलग अलग स्कूल के छात्र छात्राओं ने विभिन्न मौसमी रागों में कुँड़ुख उरांव संस्कृति का अखड़ा में नृत्य संगीत प्रस्तुत किए। मौके पर मंगरा उरांव भण्डारा, नरुवा उरांव राँची, पड़हा सदस्य श्री जुब्बी उरांव, दशरथ टाना भगत, बिजय दर्शन मिंज, मंगरा उरांव, बिरसा पहान, बुधराम उरांव, मटकु उरांव, अमर टोप्पो,बंधन उरांव, गंदुर उरांव, कार्तिक उरांव आदिवासी कुँड़ुख स्कूल निजमा बघरई टोली के शिक्षक प्रभात उरांव, बुदो उरांव मार्डन पब्लिक कुँड़ुख स्कूल मुहगाँव घाघरा के शिव प्रकाश उरांव, कार्तिक उरांव आदिवासी कुँड़ुख स्कूल मंगलो अरविंद उरांव, जे० टी० भगत बिश्रामपुर सिसई के गंगा भगत, कार्तिक उरांव आदिवासी कुँड़ुख स्कूल कार्तिक नगर सिसई के सुशील उरांव, कार्तिक उरांव कुँड़ुख स्कूल छारदा के धुमा उरांव, एतवा उरांव एवं भारी संख्या में ग्रामीण महिला पुरुष उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर गुमला सिमडेगा 15-02-2026

कुंडु उवि शिवनाथपुर में मनाया तोलों सिकिद लिपि सप्ताह

कुंडु भाषा और लिपि के संरक्षण से ही बचेगी समाज की पहचानः गीताश्री उरांव

भास्कर न्यूज|सिसई

नृत्य की प्रस्तुति करते छात्र-छात्राएं व लोग।

सिसई प्रखंड के शिवनाथ्पुर स्थित प्रस्तावित कुडु उच्च विद्यालय प्रांगण में कुंडु कत्था तोलों सिकिद लिपि सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में समाज के प्रबुद्ध जनों ने भाषा और लिपि के संवर्धन पर जोर देते हुए नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जुड़ने का आह्वान किया। स्वागत व पारंपरिक अभिनंदन कार्यक्रम की शुरुआत तजेरा पिण्ड सिसई के अध्यक्ष धुमा उरांव के स्वागत भाषण से हुई। इससे पूर्व विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने पारंपरिक रीति-रिवाज के अनुसार परिछन कर अतिथियों का अभिनंदन किया और उन्हें ससम्मान समारोह स्थल तक लाया। भाषा के बिना पहचान अधूरी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित पूर्व शिक्षा मंत्री गीताश्री उरांव ने जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी भाषा ही समाज की असली पहचान है। केवल बोलने तक सीमित न रहकर, हमें तोलों सिकिद लिपि को पढ़ने और लिखने में भी लाना होगा। जब तक हम इसे शिक्षा और दैनिक बोलचाल का हिस्सा नहीं बनाएंगे, इसका संवर्धन संभव नहीं है। डिजिटल युग में कुंडु का विस्तार मौके पर भुनेश्वर उरांव ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि कुंडु भाषा अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। यूनिकोड में शामिल होने के कारण कंप्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने से इस भाषा की जानकारी ली जा सकती है। यह समाज के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। समारोह में मुख्य रूप से बिनती उरांव, चारो उरांव, सुकुर उरांव (शिवनाथपुर), धुमा उरांव (सिसई), रोपना उरांव, बैजनाथ उरांव, गंदुरा उरांव, रंजीत उरांव, गंगा उरांव, पवन उरांव, शिव प्रकाश उरांव, दुधेश्वर उरांव उपस्थित थे। कार्यक्रम में धुम्कुडिया टीम के सदस्यों, स्थानीय शिक्षकों और भारी संख्या में छात्र-छात्राओं सहित ग्रामीणों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

कुड़ुख भाषा समाज की पहचान इसका संरक्षण जरूरी : गीताश्री

सिसई. प्रखंड के शिवनाथपुर गांव स्थित प्रस्तावित कुड़ुख उवि में कुंड़ुख कत्थ तोलोंग सिकि लिपि हप्ता दिवस मनाया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि पूर्व शिक्षामंत्री गीताश्री उरांव ने विधिवत रूप से किया. मौके पर गीताश्री उरांव ने कहा कि आज स्कूलों में बच्चों को कुड़ुख भाषा की शिक्षा देना जितना जरूरी है. उससे कहीं अधिक अपने घरों में कुड़ुख भाषा को बोलचाल में अपनाया जाना है. कुड़ुख भाषा समाज की विशेष पहचान है, जिसका संवर्द्धन जरूरी है. भुनेश्वर उरांव ने कहा कि हमारी कुड़ुख उरांव भाषा विदेश में भी प्रचलित हो रही है. यूनिक कोर्ड में शामिल होने से हर व्यक्ति आज कंप्यूटर से इसकी जानकारी ले रहा है. कार्यक्रम को अन्य वक्ताओं ने भी कुड़ुख उरांव भाषा का संरक्षण व विकास के लिए तोलोंग सिकि लिपि का बच्चों को शिक्षा देने और घरों में इसका बोलचाल में उपयोग करने पर जोर दिया. मौके पर कई स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने पारंपरिक कुड़ुख गीत-नृत्य प्रस्तुत किया गया. कार्यक्रम में अध्यक्ष धुमा उरांव, चारो उरांव, बिनित उरांव, सुकरू उरांव, धूमा उरांव, रोपना उरांव, बैजनाथ उरांव, गंदूर उरांव, रंजीत उरांव, गंगा उरांव, पवन उरांव, शिव प्रकाश उरांव, बुधेश्वर उरांव, गजेंद्र उरांव, दशरथ टाना भगत, बिरसा पहान, भोजा टाना भगत, विजय दर्शन मिंज आदि उपस्थित थे.

8. लोहरदगा जिला कुड़ुख़ कत्थ तोलोङं सिकि लिपि सप्ताह दिवस 2026

लोहरदगा जिला स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल, लोहरदगा के प्रांगन में लोहरदगा जिला कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि सप्ताह दिवस दिनांक 17 फरवरी 2025 दिन सोमवार को धुमधाम से मानाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ दिल्ली पब्लिक स्कूल, लोहरदगा के संचालक श्रीके संबांधन से आरंभ हुआ। इस उत्सव में आशा आदिवासी विद्यालय, सरना टोली, बलसोता, अध्यक्ष श्री नागदेव उरांव, बीर बुधू भगत लूरकुड़िया, मेरले के संचालक श्री संजीव भगत, भौंरो पंचायत मुखिया श्रीमती सुमन्ती उरांव, गडरपो पंचायत मुखिया सुमित उरांव एवं गांव के पहान, महतो, पुजार आदि द्वारा एक साथ मिलकर अमर शहीद वीर बुधु भगत के फोटो मालयार्पण किया गया तथा दीप जलाकर शुभारंभ किया गया।

ज्ञात हो कि टाटा स्टील फाउण्डेशन के सहयोग से तथा अद्दी कुड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, संस्था के देखरेख में यहां कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण कार्य चल रहा है। इस योजना के तहत यहां के बच्चे हिन्दी, अंगरेजी और कुड़ुख़ भाषा अपनी लिपि में तोलोंग सिकि में पढ़–लिख रहे हैं। इस कार्य में यहां के सामाजिक कार्यकताओं का भरपुर सहयोग मिल रहा है। इस अवसर पर टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर के सहयोग से प्रकाशित, कुँड़ुख टाईम्स, धुमकुड़िया : एक आरंभिक आदिवासी पाठशाला एवं चिंचो डण्डी अरा ख़ीःरी पुस्तक का वितरण किया गया।

भाषा शिक्षा के साथ समाज के लोग अपने पूर्वजों को याद करने के लिए अमर शहीद वीर बुधू भगत जयंती मनाये। यह बतलाते चलें कि वीर बुधुभगत, उराँव समाज की परम्परागत सामाजिक व्यवस्था पड़हा–धुमकुड़िया–अखड़ा को संगठित कर अंगरेजी हुकुमत के खिलाफ आंदोलन किये थे। वर्ष 1831–32 में लरका आंदोलन हुआ। लरका आंदोलन के नायक अमर शहीद वीर बुधू भगत के कुटुम्ब के लगभग 300 से अधिक सदस्य एक ही समय–काल में शहीद हुए, जिसे भारतीय इतिहास में नजर अंदाज किया गया। सन् 1832 ई० का यह लरका आन्दोलन अंगरेजी शासन के खिलाफ एक असहयोग आन्दोलन के साथ गुरिला आंदोलन भी था। शहीद वीर बुधू भगत ने समाज की रूढ़ीगत सामाजिक व्यवस्था पड़हा–अखड़ा–धुमकुड़िया को संगठित कर अंगरेजी हुकुमत के खिलाफ आंदोलन किया था। इस सामाजिक सशक्तिकरण का अवयव अंग को अंगरेजी सरकार भी समझ चुकी थी कि उरांव–मुण्डा क्षेत्र में ''पड़हा अखड़ा धुमकुड़िया'' जबतक संगठित रहेगा, समाज हमेशा संगठित रहेगा। कुड़ुख़ भाषा और तोलोंग सिकि शिक्षा, इस पहचान को आगे ले जाने लगी है।

कुँड़ुख कत्थ तोलोंग सिकि हप्ता उल्ला
17 2026
DELHI PUBLIC SCHOOL
LOHARDAGA

कुँड़ुख कत्थ तोलोंग सिकि हप्ता उल्ला

9. साउथ दिनाजपुर जिला कुड़ुख़ कत्थ तोलोङ सिकि लिपि सप्ताह दिवस 2026

पश्चिम बंगाल राज्य के जिला दक्षिण दिनाजपुर, मुख्यालय बालुरघाट के केसोरकुरी ग्राम में कुड़ुख़ तोलोंग सिकि भाषा सप्ताह दिवस 2025 सह अमर शहीद बीर बुधूभगत जन्म दिवस दिनांक 17 फरवरी 2025 दिन सोमवार को धुमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम का संयोजन कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण केन्द्र के केन्द्र शिक्षक श्रीमती मंगली कुजूर, श्री बनमाली कुजूर एवं श्री महेश कछुया के देखरेख में सम्पन्न हुआ।

ज्ञात हो कि टाटा स्टील फाउण्डेशन के सहयोग से तथा अद्दी कुड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, संस्था के देखरेख में यहां कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण कार्य चल रहा है। इस योजना के तहत यहां के बच्चे बंगला, अंगरेजी और कुड़ुख़ भाषा अपनी लिपि में तोलोंग सिकि में पढ़–लिख रहे हैं। इस कार्य में यहां के सामाजिक कार्यकताओं का भरपुर सहयोग मिल रहा है। इस अवसर पर टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर के सहयोग से प्रकाशित, कुँड़ुख टाईम्स, धुमकुड़िया : एक आरंभिक आदिवासी पाठशाला एवं चिंचो डण्डी अरा ख़ी:री पुस्तक का वितरण किया गया। इस आयोजन में इस क्षेत्र में चल रहे तीन कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण केन्द्र के शिक्षक एवं छात्र उपस्थित थे। इस क्षेत्र तीन भाषा केन्द्र चल रहा है जिनमें – 1. धुमकुड़िया केसोरकुरी (भाषा केन्द्र शिक्षक – बनमाली कुजूर) 2. धुमकुड़िया जोजियार (भाषा केन्द्र शिक्षक – महेश कछुया) 3. धुमकुड़िया बनियल (भाषा केन्द्र शिक्षक – श्रीमती मंगली कुजूर) है। भाषा शिक्षा के साथ समाज के लोग अपने पूर्वजों को याद करने के लिए अमर शहीद वीर बुधू भगत जयंती मनाये।

यह बतलाते चलें कि वीर बुधुभगत, उराँव समाज की परम्परागत सामाजिक व्यवस्था पड़हा–धुमकुड़िया–अखड़ा को संगठित कर अंगरेजी हुकुमत के खिलाफ आंदोलन किये थे। शहीद वीर बुधू भगत ने समाज की रूढ़ीगत सामाजिक व्यवस्था पड़हा–अखड़ा–धुमकुड़िया को संगठित कर अंगरेजी हुकुमत के खिलाफ आंदोलन किया था। इस सामाजिक सशक्तिकरण का अवयव अंग को अंगरेजी सरकार भी समझ चुकी थी कि उरांव–मुण्डा क्षेत्र में ''पड़हा अखड़ा धुमकुड़िया'' जबतक संगठित रहेगा, तबतक आदिवासी समाज संगठित रहेगा। आदिवासी समाज का वह दर्शन अब समय की मांग है – ''वीर बुधू भगत के आन्दोलन का आधार स्तंभ पड़हा–धुमकुड़िया–अखड़ा फिर से जगे।''

10. रोहतास–कैमूर जिला कुड़ुख़ कत्थ तोलोङं सिकि लिपि सप्ताह दिवस 2026 सम्पन्न

बिहार के रोहतास एवं कैमूर जिला स्थित कुड़ुख़ तोलोंग सिकि शिक्षण लूरकुड़िया, इस वर्ष भी रोहतासगढ़ पंचायत अंतर्गत ग्राम माधा में उरांव समाज के लोग अपनी परम्परागत भाषा एवं संस्कृति की रक्षा हेतु कुड़ुख़ तोलोंग सिकि दिवस एवं अमर शहीद वीर बुधु भगत जयंती समारोह मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उनके प्रतिमा पर माला अर्पण कर एवं दीप प्रज्वलित कर शुरुआत की गई इस कार्यक्रम में रोहतास प्रखंड समेत अधौरा प्रखंड एवं नोहटा प्रखंड के भी ग्रामीण भी शामिल थे और रोहतास कैमूर में चल रहे तोलोंग सिकी लिपि भाषा शिक्षक–शिक्षिकाएं समेत बच्चे भी शामिल होकर अपने कुड़ुख संगीत के साथ अपना प्रस्तुति पेश किया गया। इस क्रम में बच्चों को प्रतियोगिता के अनुसार उन्हें सम्मानित भी किया गया।

ज्ञात हो कि टाटा स्टील फाउण्डेशन के सहयोग से तथा अद्दी कुड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, संस्था के देखरेख में यहां कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण कार्य चल रहा है। इस योजना के तहत यहां के बच्चे बंगला, अंगरेजी और कुड़ुख़ भाषा अपनी लिपि में तोलोंग सिकि में पढ़–लिख रहे हैं। इस कार्य में यहां के सामाजिक कार्यकताओं का भरपुर सहयोग मिल रहा है। इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप में झारखण्ड से कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि के प्रसंशक डॉ0 बिरसा उरांव (पूर्व केंद्रीय सरना समिति झारखंड के उपाध्यक्ष) भी शामिल थे एवं उनके द्वारा क्षेत्रीय असहाय पीड़ित विधवा महिलाओं को कंबल देकर सम्मानित भी किया गया तथा रोहतास अकबरपुर के मां पुस्तक भंडार के मलिक संतोश कुमार के द्वारा बच्चे एवं बच्चियों को एवं प्रतियोगिता में सफल होने वाले छात्र–छात्राओं को मेडल, नोटबुक, कलम एवं पानी पीने वाला बोतल से सम्मानित किया ।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मनोज उरांव ने बताया कि बिहार का यह पहला स्टैचू है जिसे रोहतासगढ़ समेत अन्य प्रखंडों के लोगों के सहयोग के द्वारा स्थापित कराया गया था और यह प्रतिमा को स्थापित करने से पूरे पंचायत ही नहीं पूरे राज्य में एक बहुत बड़ा खुशी का संदेष जा रहा है और हमारे आदिवासी समाज में जन्मे सारे महापुरुषों का सम्मान भी बड़ा है। इस कार्यक्रम में करुणा देवी तोलोंग सिकि की शिक्षिका में से नागाटोली से रीना देवी, कैमूर झड़पा से किरण कुमारी, कैमूर दुग्घा गांव से संपतिया कुमारी, माधा से इंद्रावती कुमारी, तोलोंग सिकी के पूर्व शिक्षक श्री सुरेंद्र उरांव एवं बबन तालाब से वीरेंद्र उरांव कार्यक्रम के सक्रिय कार्यकर्ता वीरेंद्र उरांव अखिलेष उरांव अरुण कुमार दिनेश उरांव, धनंजय उरांव समेत कुड़ुख़ भाषा शिक्षा केन्द्र के तमाम छात्र एवं सैकड़ो ग्रामीण कार्यक्रम में उपस्थित थे।

11. कुडुख़ कत्थ तोलोङ सिकि लिपि सप्ताह दिवस 2026 कोलहान में सम्पन्न

वर्ष 2026 में पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर, कोलहान में कुडुख़ कत्थ तोलोंग सिकि लिपि सप्ताह दिवस इस बार कई स्थानों पर धूमधाम से मनाया गया। दिनांक 13 फरवरी 2025 दिन शुक्रवार को सीताराम डेरा तथा मनीटोली चाईबासा और रोयाडीह चौका में मनाया गया। बिरसा नगर, जोन न0 06 में दिनांक 15.02.2025 दिन रविवार को हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी धुमधाम से कुडुख़ कत्थ तोलोङं सिकि लिपि सप्ताह दिवस मानाया गया। इसी तरह दिनांक 24.02.2026 दिन मंगलवार को सोनारी जमशेदपुर में कुडुख़ कत्थ तोलोङ सिकि लिपि सप्ताह दिवस मानाया गया। सोनारी धुमकुड़िया में भाषा सप्ताह में, झारखण्ड आन्दोलनकारी सेनानी, श्री अजीत तिर्की उपस्थित थे। उन्होंने कहा – कुडुख भाषा हमारी मातृभाषा है। हमें उसे अगली पीढ़ी तक पहूंचाना है। इसके लिए अपनी भाषा के साहित्य का विकास करना होगा। उसके लिए एक लिपि की आवश्यकता होगी और हमारे समाज के पास अपनी भाषा की लिपि तोलोंग सिकि है। इसे झारखण्ड सरकार एवं पश्चिम बंगाल सरकार में मान्यता प्राप्त है। यह लिपि तोलोंग सिकि से मैट्रिक परीक्षा लिखने के लिए जैक से अनुमति प्राप्त है और वर्ष 2009 मैट्रिक की परीक्षा लिखी जा रही है। अब समाज में, गाँव का धुमकुड़िया को जगाने की जरूरत है। यहां से बच्चे धुमकुड़िया से लूरकुड़िया (स्कूल) की ओर बढ़ेंगे, तो भाषा संरक्षण का कार्य अपने आप होने लगेगा। इस अवसर पर तोलोंग सिकि जनक डॉ0 नारायण उरांव ने कहा – अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तकनीकी विकास की सीढ़ी के अन्तर्गत, तोलोंग सिकि को यूनिकोड मिल गया है।

ज्ञात हो कि टाटा स्टील फाउण्डेशन के सहयोग से तथा अद्दी कुडुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, संस्था के देखरेख में यहां कुडुख़ भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण कार्य चल रहा है। इस योजना के तहत यहां के बच्चे हिन्दी, अंगरेजी और कुडुख़ भाषा अपनी लिपि में पढ़–लिख रहे हैं। इस कार्य में यहां के सामाजिक कार्यकताओं का भरपुर सहयोग मिल रहा है। इस अवसर पर टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर के सहयोग से प्रकाशित, कुडुख टाईम्स, एवं चिंचो डण्डी अरा ख़ीःरी पुस्तक का वितरण किया गया।

Dhumkudiya sitaram dera

Dhumkudiya Birsanagar zone-6

Dhumkuriya
birsanagar zone no -6

Dhumkudiya nutandih dimna

Dhumkudiya royadih cawka

Dhumkuriya mari tola
chaibasa

Dhumkuriya sonari

Dhumkudiya royadih cawka

12. बुढ़ीपाट, भरनो, कुड़ुख़ कत्थ तोलोङ सिकि लिपि सप्ताह दिवस 2026

कुड़ुख़ चम्म्बी, लूरकुड़िया, बुढ़ीपाट भरनो विद्यालय में टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर एवं अद्दी कुड़ुख़ चाला ध ुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, संस्था द्वारा संचालित एजेरना बेड़ा प्रोजेक्ट के तहत एक कुड़ुख़ भाषा केन्द संचालित है। इस विद्यालय में दिनांक 22.02.2026 दिन रविवार को आदिवासी भाषा–संस्कृति एवं लिपि के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए कुडुख चम्मबी लूरकुड़िया स्कूल द्वारा कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि दिवस मनाया गया। ज्ञात हो कि यह विद्यालय इस विद्यालय की स्थापना का उद्देश्य इस क्षेत्र में कुडुख भाषा एवं तोलोंग लिपि के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना है, जिससे कि नई पीढ़ी अपनी मातृभाषा से जुड़ी रहे। इस समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ नारायण उरांव,विषिश्ट अतिथि के रूप में राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा के अध्यक्ष मुकेश उरांव, पड़हा अध्यक्ष लधुवा उरांव, जुगल उरांव सहित कई गणमान्य लोगों के द्वारा सामूहिक रूप से अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर एवं फीता काटकर किया। कार्यक्रम की आरंभ में पारंपरिक रीति–रिवाजों के साथ की गई, जिससे आयोजन में सांस्कृतिक रंग भी देखने को मिला. विद्यालय के संस्थापक रतिया उरांव ने सभी अतिथियों का पारंपरिक अंगवस्त्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया.।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि डॉ नारायण उरांव ने कहा कि आधुनिकता की दौड़ में आदिवासी समाज की भाषा और संस्कृति धीरे–धीरे विलुप्त होती जा रही है। ऐसे समय में इस प्रकार के विद्यालय की स्थापना अत्यंत सराहनीय पहल है। उन्होंने कहा कि तोलोंग लिपि के माध्यम से बच्चों को कुडुख भाषा की शिक्षा मिलने से उनमें अपनी पहचान और सांस्कृतिक चेतना मजबूत होगी। उन्होंने आगे कहा कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से बच्चों की बौद्धिक क्षमता का विकास अधिक प्रभावी ढंग से होता है। यह विद्यालय न केवल भाषा सिखाने का केंद्र बनेगा, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता का भी माध्यम बनेगा। यहां अतिथियों सदस्यों ने भी इसे ऐतिहासिक कदम बताते हुए इसे समाज के लिए मील का पत्थर बताया। यह कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि/लिपि के माध्यम से संचालित भरनो प्रखण्ड का पहला विद्यालय है। इस कार्यक्रम गांव के लोग उत्साहित हुए और इसी तर्ज पर अपने क्षेत्र में स्कल चलाने की योजना बनाने लगे। साथ ही इस क्षेत्र में धुमकुड़िया संचालन हेतु सामाजिक जागरूकता तेज हुई है।

13. रांची जिला कुडुख़ कत्थ तोलोङ सिकि लिपि सप्ताह दिवस 2026 सम्पन्न

रांची जिला, बेड़ो प्रखण्ड स्थित कईली दई कुडुख़ लूरकुड़िया, मनख़ा मुण्डा, बेड़ो, के स्कूल प्रांगण में दिनांक 25 फरवरी 2026 दिन मंगलवार को एक दिवसीय कुंडुख़ भाषा तोलोंग सिकि सप्ताह रांची जिला दिवस 2026 समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह का उद्घाटन माननीय सांसद लोहरदगा, श्री सुखदेव भगत के दीप प्रज्वलन से आरंभ हुआ। इस समारोह का संचालन स्कूल संचालक श्री पंकज उरांव द्वारा किया गया।

स्कूल संचालक महोदय की ओर से आह्वान किया गया कि कुंडुख़ भाषा की लिपि तालोंग सिकि है और अब समय आ गया है कि हमलोग सभी मिलकर अपनी भाषा को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल कारएं। इस अवसर पर माननीय सांसद महोदय द्वारा खुशी जाहिर किया गया और उन्होंने कहा कि कुड़ख़ भाषा, संस्कृति एवं लिपि के संरक्षण हेतु मैं कार्य करता रहुंगा। इस समारोह में रांची जिला के कुडुख़ भाषा तोलोंग सिकि लिपि के पठन–पाठन से जुड़े छोटे–बड़े विद्यालय एवं धुमकुड़िया के छात्र, शिक्षक एवं अभिभावक शामिल थे। इस अवसर पर सँवसे खे़:खे़ल रा:जी आदिवासी परदाअ़ना खोंड़हा के अध्यक्ष श्री सुका उराँव, रूढ़ीप्रथा पद्दा पड़हा बिसुसेन्दरा के देवान श्री मटकु उराँव एवं कोटवार श्री गजेन्द्र उराँव, मुखिया खुखरा पंचायत जतरू उरांव, रातु रांची से समाजसेवी श्रीमती चन्द्र प्रभा तिर्की एवं कुंडुख भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण केन्द्र के शिक्षक छात्र उपस्थित थे। अतिथियों ने कहा कि कुंडुख भाषा साहित्य के विकास में उस भाषा की अपनी लिपि आवश्यक है और तोलोंग सिकि से मैट्रिक परीक्षा लिखने के लिए जैक से अनुमति प्राप्ति के समय समाज के सभी लोग एक साथ जुड़कर राष्ट्रपति शासन 2009 के दौरान सफल हुए। इस मुहिम में अनेक लोग एक सक्रीय कार्यकर्ता बनकर कार्य करते रहे। वर्तमान में उरांव समाज को अपनी भाषा संस्कृति की रक्षा हेतु धुमकुड़िया को फिर से पुनर्गठित करना होगा। गाँव का धुमकुड़िया जगने से, बच्चे धुमकुड़िया से लूरकुड़िया (स्कूल) की ओर बढ़ेंगे तो भाषा संरक्षण का कार्य अपने आप होने लगेगा। इस कार्यक्रम में कुँड़ुख भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण केंद्र के पाँच सेंटर क्रमवार 1. कईली दईई लूरकुड़िया, बेड़ो 2. कार्तिक उराँव ए.वी.डी.एम. टांगरबसली 3. धुमकुड़िया कुल्ली, नगड़ी 4. धुमूकुड़िया जामटोली द्वारा अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत किया गया।

ज्ञात हो कि टाटा स्टील फाउण्डेशन के सहयोग से अद्दी कुडुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, संस्था के देखरेख में कुडुख़ भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण कार्य चल रहा है। यहां के बच्चे हिन्दी, अंगरेजी और कुडुख़ भाषा अपने लिपि में पढ़–लिख रहे हैं। इस कार्य में यहां के सामाजिक कार्यकताओं का भरपुर सहयोग मिल रहा है। इस अवसर पर टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर के सहयोग से प्रकाशित, कुँड़ुख टाईम्स, एवं चिंचो डण्डी अरा ख़ी:री पुस्तक का वितरण किया गया। इस आयोजन में भाषा शिक्षण केन्द्र में से रांची जिला के सभी केन्द्र शामिल थे। रिपोर्टर – पंकज उरांव, बेड़ो, रांची।

14. कुडुख़ तोलोङ सिकि : एक आदिवासी गांव से यूनिकोड तक

L2/23-024
2023-01-05

Proposal to encode Tolong Siki in Unicode

Anshuman Pandey

pandey@umich.edu
pandey.github.io/unicode

January 5, 2023

1 Introduction

Tolong Siki is an alphabet used for writing Kurukh (ISO 639-3: kru), a Dravidian language spoken by 2.28 million persons in India, primarily in the states of Jharkhand, Bihar, and West Bengal. It was invented in 1988 by Dr. Narayan Oraon of Gumla district, Jharkhand. The script was developed over the years in collaboration with Francis Ekka, the former director of the Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysore; Padma Shri Ram Dayal Munda, the former Vice Chancellor of Ranchi University; and Dr. Nirmal Minz, founder principal, Gossner College, Ranchi. Tolong Siki was formally published on May 15, 1999.

In 2010, I submitted "Preliminary Proposal to Encode the Tolong Siki Script in the UCS" (N3811 L2/10-106) to the Unicode Technical Committee. At that time, relatively little was known about Tolong Siki outside of the Kurukh community. So, the purpose of that document was to inform an international audience about the existence and usage of Tolong Siki. It was not a formal request to include the script in The Unicode Standard. Also, as Tolong Siki is a newly-invented script, there was a need to measure the suitability of including the script in Unicode. Tolong Siki is one of more than twenty scripts that have been invented in the past thiry years. Some of these scripts are used today, while many are not. Also, those in use have display varying degrees of the following attributes that help to determine suitability of encoding a script in Unicode: stability of the script and character repertoire; acceptance by the user community; usage in publications; technological development; and institutional support or official recognition.

I have monitored the usage and development of Tolong Siki over the past twelve years. The script's creator, Narayan Oraon, has provided updates through the years. I have been contacted regarding the status of Tolong Siki in Unicode by numerous members of the user community, among whom Ashwin Kumar Kispotta has provided me with substantial document of the script. Based on this information, it is clear today that Tolong Siki has achieved the aforementioned criteria.

1. *Stability* Tolong Siki has remained highly stable in its structure and basic repertoire from the time of its official release in 1999. The vowel and consonant letters, as well as digits, are unchanged in both inventory, semantics, and form. Latin punctuation continue to be used. Changes have been made to the set of diacritics signs, namely the addition of new signs that extend the ability of the script to represent new sounds.

2. *Acceptance* The script is very much alive and enjoys increasing usage within the Kurukh-speaking communities in India. It is taught to Kurukh speakers in primary schools, cultural organizations, and through community publications.

3. *Development* Two digitized fonts are available for Tolong Siki. "Singi Dai" was designed by Nemhas Ekka of Lohardaga district, Jharkhand and released in March 2007. The second, "Kelly Tolong" was designed by Kislaya IT Services (KITS) and released in April 2007. The "Kelly Tolong" font is used in this proposal, and is the font used in the *Kurukh Times* and most books.

4. *Publications* Primers for the script have been published both by community organizations and state education boards, and in different languages. Various Kurukh-Hindi primers have been published by Narayan Oraon (see figs. 1-3 for excerpts from a primer from 2021) A Kurukh-Bengali primer was published in 2016 by Mahesh Minz (see figs. 12–13). A newsletter called the *Kurukh Times* is published regularly (see fig 9, 10). The script is used on covers of books (see fig. 14).

5. *Institutional Support* The Tribal Cultural Society, a philanthropic organization of the Tata Steel Foundation, provides support for publications in Tolong Siki (see book covers in fig. 14).

6. *Official Recognition* Tolong Siki has received formal recognition in several states as one of the official scripts for the Kurukh language (see, for example, the reference in fig. 6). On April 3, 2007, it was recognized as the formal script for Kurukh by the government of Jharkhand (*The Telegraph* 2007). In 2009, the state of Jharkhand permitted usage of the script for secondary school examinations (see fig. 7). In February 2016, Jharkhand granted permission for the script to be used for writing university examinations (see fig. 8). In 2017, the government of West Bengal recognized Tolong Siki as an official script for Kurukh (*The Hindu* 2017).

Accordingly, this document is a formal proposal to include Tolong Siki in The Unicode Standard. Given the stability of the script, the core repertoire presented in L2/10-106 remains unchanged. Major changes to the proposed encoding include:

- Inclusion in the repertoire of the auspicious sign *ũggu*
- Documentation of additional diacritics used for modifying consonant and vowel sounds
- Unification of Tolong Siki diacritics with common combining signs already encoded in Unicode

2 The Script

Tolong Siki ([Tolong Siki text]) is an alphabetic, left-to-right script. It is an invented writing system, but it possesses structural and graphical features similar to other scripts that evolved organically from Brahmi.

There are 6 vowel letters ([Tolong Siki text] *sarah tōr*):

There are 35 consonants ([Tolong Siki text] *harah tōr*):

As per the chart in fig. 5, the letter [Tolong Siki text] *ha* has the variant form [Tolong Siki text]. But, that is no longer used.

The arrangement of the consonant repertoire into classes based on the points of articulation is based on the Brahmi pattern. However, the ordering of classes for the base consonant letters is reversed in Tolong Siki, such that the first class consists of letters representing labial sounds instead of velars as in the Brahmi model. Tolong Siki consonant letters are alphabetic, so they do not possess the inherent *a*.

Tolong Siki

Range: 11DB0–11DEF

This file contains an excerpt from the character code tables and list of character names for
The Unicode Standard, Version 17.0

Characters in this chart that are new for The Unicode Standard, Version 17.0 are shown in conjunction with any existing characters. For ease of reference, the new characters have been highlighted in the chart grid and in the names list. This file will not be updated with errata, or when additional characters are assigned to the Unicode Standard.

See https://www.unicode.org/errata/ for an up-to-date list of errata.

See https://www.unicode.org/charts/ for access to a complete list of the latest character code charts. See https://www.unicode.org/charts/PDF/Unicode-17.0/ for charts showing only the characters added in Unicode 17.0. See https://www.unicode.org/Public/17.0.0/charts/ for a complete archived file of character code charts for Unicode 17.0. See https://www.unicode.org/charts/About.html#Conventions for conventions used in these code charts, and other general information.

Disclaimer

These charts are provided as the online reference to the character contents of the Unicode Standard, Version 17.0 but do not provide all the information needed to fully support individual scripts using the Unicode Standard. For a complete understanding of the use of the characters contained in this file, please consult the appropriate sections of The Unicode Standard, Version 17.0, online at https://www.unicode.org/versions/Unicode17.0.0/, as well as the Unicode Standard Annexes, the other Unicode Technical Reports and Standards, and the Unicode Character Database, which are available online.

See https://www.unicode.org/ucd/ and https://www.unicode.org/reports/

A thorough understanding of the information contained in these additional sources is required for a successful implementation.

Fonts

The shapes of the reference glyphs used in these code charts are not prescriptive. Considerable variation is to be expected in actual fonts.

See https://www.unicode.org/charts/fonts.html for a list.

Terms of Use

© 1991–2025 Unicode, Inc. This publication is protected by copyright, and permission must be obtained from Unicode, Inc. prior to any reproduction, modification, or other use not permitted by the Terms of Use (https://www.unicode.org/copyright.html). Specifically, you may make copies of this publication and may annotate and translate it solely for personal or internal business purposes and not for public distribution, provided that any such permitted copies and modifications fully reproduce all copyright and other legal notices contained in the original. You may not make copies of or modifications to this publication for public distribution, or incorporate it in whole or in part into any product or publication without the express written permission of Unicode.

The Unicode Consortium specifically grants ISO a license to produce such code charts with their associated character names list to show the repertoire of characters for that standard, as a normatively referenced, integral part of that standard.

Unicode uses most fonts under restricted license from the original font owner. You may not extract, copy, modify, or distribute fonts or font data from any Unicode Products, including this publication, without license from the font owner.

Use of all Unicode Products, including this publication, is governed by the Unicode Terms of Use (https://www.unicode.org/copyright.html). The authors, contributors, and publishers have taken care in the preparation of this publication, but make no express or implied representation or warranty of any kind and assume no responsibility or liability for errors or omissions or for consequential or incidental damages that may arise therefrom. This publication is provided "AS-IS" without charge as a convenience to users.

Unicode and the Unicode Logo are registered trademarks of Unicode, Inc., in the United States and other countries.

दैनिक भास्कर

रांची 21-02-2026

06

विश्व मातृभाषा दिवस कुड़ुख भाषा की अस्मिता व 'तोलोंग सिकि' लिपि के सफर के बारे में डॉ. नारायण उरांव से बातचीत

'माला डी' के पर्चे से उपजा क्रांतिकारी विचार, पारंपरिक पहनावे के नाम पर हुआ लिपि का गौरवशाली नामकरण

कुंदन कुमार चौधरी • किसी भी समाज की पहचान उसकी भाषा और लिपि से होती है। उरांव समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को अक्षरों के माध्यम से सहेजने का श्रेय सुप्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. नारायण उरांव को जाता है। मोरहाबादी के रहने वाले डॉ. नारायण मूल रूप से गुमला से हैं और जमशेदपुर में चिकित्सक हैं। पेशे से चिकित्सक होने के बावजूद, अपनी मातृभाषा के प्रति उनके अगाध प्रेम ने 'तोलोंग सिकि' जैसी वैज्ञानिक लिपि को जन्म दिया। आज यह लिपि न केवल झारखंड के स्कूलों में अपनी जगह बना चुकी है, बल्कि डिजिटल दुनिया और यूनिकोड तक का सफर तय कर वैश्विक क्षितिज पर चमक रही है। **प्रस्तुत है डॉ. उरांव के साथ हुई बातचीत के प्रमुख अंश...**

कुड़ुख भाषा के लिए देवनागरी के बजाय एक अलग लिपि 'तोलोंग सिकि' बनाने का विचार आपके मन में कब और कैसे आया?

-वर्ष 1989 में जब मैं दरभंगा मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस के बाद इंटर्नशिप कर रहा था, तब मैंने 'सरना समाज और उसका अस्तित्व' पुस्तक लिखी। लेखन के दौरान मुझे एक विशिष्ट लिपि की कमी खली। एक दिन मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मेरा ध्यान 'माला डी' (गर्भ निरोधक गोली) के पर्चे और '100 रुपये के नोट' पर गया। वहां एक ही नाम कई लिपियों में अंकित था। मुझे लगा कि यदि आदिवासियों की भी अपनी लिपि होती, तो हमारी भाषा भी वहां दर्ज होती। बस, यही वह पल था जिसने मुझे इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

इस लिपि को शोध कर आकार देने में कितना समय लगा और ध्वनियों को प्रतीकों में ढालने में क्या तकनीकी चुनौतियां आईं?

-एक लंबे विमर्श के बाद 13 अप्रैल 1994 को डॉ. रामदयाल मुंडा ने 'कुड़ुख तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न' का लोकार्पण किया। इसके बाद शिक्षाविदों के सुझाव पर मैंने वर्णमाला में आवश्यक सुधार किए। 1998 में डॉ. फ्रांसिस एक्का, डॉ. निर्मल मिंज और डॉ. रामदयाल मुंडा जैसे विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में यह तय हुआ कि नई लिपि सामाजिक-सांस्कृतिक आधार वाली और तकनीकी मापदंडों पर खरी होनी चाहिए। इस पूरी प्रक्रिया में कई वर्ष का गहन शोध लगा।

'तोलोंग सिकी' कुड़ुख भाषा की विशिष्ट ध्वनियों को व्यक्त करने में कितनी वैज्ञानिक और सक्षम है?

-1989 से 1993 के बीच इस पर छह बार संशोधन हुए। हमने देवनागरी के उन वर्णों (जैसे- ष, क्ष, त्र, ज्ञ, ऋ) को हटा दिया जिनका कुड़ुख में व्यवहार नहीं होता। लिपि को आदिवासी परंपरा के अनुकूल 'एंटी-क्लॉकवाइज' (घड़ी की विपरीत दिशा) अनुक्रम में रखा गया है। 15 मई 1999 को इसे जनमानस के लिए जारी किया गया, जो कुड़ुख की मौलिक ध्वनियों को सटीकता से व्यक्त करने में पूरी तरह सक्षम है।

डिजिटल युग में इस लिपि की क्या स्थिति है, क्या यह यूनिकोड पर उपलब्ध है?

डॉ. नारायण उरांव

-डिजिटल क्षेत्र में हमने लंबी दूरी तय की है। 2002 में 'केलि तोलोंग फॉन्ट' आया, जिसे पत्रकार किसलय ने तैयार किया था। 2010 में हमारी वेबसाइट (tolongsiki.com) शुरू हुई। गर्व की बात है कि सितंबर 2025 में इसे यूनिकोड ब्लॉक 17 में शामिल कर लिया गया है। अब हमें बस विभिन्न मोबाइल कंपनियों द्वारा इसे एंड्रॉइड कीबोर्ड में शामिल किए जाने का इंतजार है।

व्यक्तिगत आविष्कार से लेकर सरकारी मान्यता मिलने तक का सफर कैसा रहा?

-यह सफर चुनौतीपूर्ण था। झारखंड सरकार ने 2003 में इसे कुड़ुख की लिपि के रूप में स्वीकृति दी और 8वीं अनुसूची में शामिल करने हेतु केंद्र को अनुशंसा भेजी। शैक्षणिक स्तर पर 2009 में जैक (JAC) ने झुमरी के 29 छात्रों को इस लिपि में परीक्षा देने की अनुमति दी और 2016 से यह अनुमति सभी परीक्षार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से लागू हो गई।

क्या झारखंड के शिक्षण संस्थानों में तोलोंग सिकि को अनिवार्य कर देना चाहिए?

-राज्य गठन के बाद 2001 से कुड़ुख की पढ़ाई नए सिलेबस के साथ शुरू हुई है। 2009 से गैर-सरकारी स्कूलों में तोलोंग सिकि से पढ़ाई हो रही है। कॉलेजों में भी इसे पूरी तरह लागू कराने के लिए सामाजिक प्रयास जारी हैं, हालांकि अभी इसे पूर्णतः अनिवार्य किया जाना शेष है।

अगले 50 वर्षों में आप इस लिपि को कहां देखते हैं और युवाओं के लिए आपका क्या संदेश है?

-इसका भविष्य उज्ज्वल है। आज इस लिपि में परीक्षा देने वाला छात्र अमेरिका में पीएचडी कर रहा है। जापान के विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम और आईआईटी मुंबई के शोध प्रोजेक्ट्स में भी तोलोंग सिकि शामिल है। युवाओं से यही कहूंगा कि अपनी जड़ों और अपनी लिपि से जुड़ें, क्योंकि यही आपकी असली पहचान है।

लिपि का नाम 'तोलोंग सिकी' ही क्यों रखा गया?

-25 दिसंबर 1995 को रांची में हुई एक बैठक में डॉ. बहुरा एक्का ने यह नाम सुझाया था। 'तोलोंग' उरांव समाज का पारंपरिक पहनावा है। चूंकि लिपि के अक्षरों की बनावट इस सांस्कृतिक प्रतीक से मेल खाती है और यह हमारी अस्मिता से जुड़ी है, इसलिए इसका नाम 'तोलोंग सिकि' रखा गया।

15. झारखण्डी साहित्यकारों को ''झारखण्ड साहित्य अकादमी सम्मान''

21 फरवरी 2026 को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर अखिल झारखण्ड साहित्य अकादमी द्वारा झारखण्ड के 09 साहित्यकारों को उनके द्वारा किये गए कार्यों के लिए झारखण्ड साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मानित किया गया। ज्ञात हो कि साहित्य सम्मान आयोजन अखिल झारखण्ड साहित्य अकादमी का द्वितीय समारोह है। इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व वित्त मंत्री एवं पूर्व आई.पी.एस.अधिकारी डॉ. रामेश्वर उरांव उपस्थित थे। झारखण्डी साहित्यकारों की इस समूह के अध्यक्ष पूर्व झारखण्ड आंदोलनकारी एवं पूर्वव विधायक श्री सूरज सिंह बेसरा एवं महासचिव डॉ0 श्रीमती सविता केसरी जी हैं तथा 09 भाषा के अलग–अलग संयोंजक हैं। इस अवसर पर कुडुख़ तोलोंग सिकि (लिपि) के जनक डॉ0 नारायण उरांव को उनकी सुस्तक ''तोलोंग सिकि का उद्‌भव और विकास''के लिए ''झारखण्ड साहित्य अकादमी सम्मान'' प्रदान किया गया।

16. रूढ़ीप्रथा ग्रामसभा पड़हा बिसुसेन्दरा, सिसई–भरनो 2026 (कार्यशाला रिपोर्ट)

भारतीय संसद द्वारा पारित पेसा अधिनियम 1996 (PESA ACT 1996) के Section 4(d) तथा पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) झारखण्ड, नियमावली 2025 के धारा 7(iii) के तहत दिनांक 01 मार्च 2026 दिन रविवार को गुमला जिला के अन्तर्गत परम्परागत पड़हा गांव, कुल 160 (93+67) राजस्व ग्राम एवं पड़हा प्रतिनिधि द्वारा अपनी रूढ़ी–परम्परा के अनुसार "रूढ़ीप्रथा पद्दा पड़हा बिसुसेन्दरा, सिसई–भरनो" का एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित किया गया। रूढ़ीप्रथागत उराँव आदिवासी समाज द्वारा आयोजित रूढ़ीप्रथा पद्दा पड़हा बिसुसेन्दरा का यह पूर्वसम्मेलन कार्यशाला ग्राम : जिरहुल, थाना : भरनो, जिला : गुमला के सरना स्थल (चाःला टोंका) में सम्पन्न हुआ। कार्यशाला की अध्यक्षता जिरहुल ग्राम के परम्परागत पहान श्री बुधवा उरांव द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में 160 गाँव के ग्रामसभा के प्रतिनिधि एवं पदधारी (पहान, माहतो, पुजार, करटहा, कोटवार, गौंरो इत्यादि) तथा पड़हा गांव के महिला–पुरूष उपस्थित थे, जिसमें निम्नलिखित नियमावली सह मार्गदर्शिका पर चर्चा हुई और एवं स्वीकृत किया गया –

भाग 1. नामकरण – इस नियमावली सह मार्गदर्शिका को **रूढ़ीप्रथा ग्रामसभा न्यायपंच 2026** कहा जाएगा।

भाग 2. कार्यक्षेत्र –

(क) इस नियमावली सह मार्गदर्शिका का विस्तार, रूढ़ीप्रथागत उरांव समाज में प्रत्येक व्यक्ति के पद्दा (गांव) एवं पड़हा तथा वैसे रूढ़ीप्रथा उरांव जनजाति/आदिवासी समाज तक होगा, जहां वे निवास करते हैं।

(ख) इस नियमावली को भारत में निवासरत, रूढ़ीप्रथागत उरांव समाज के सभी सदस्य अंगीकार कर सकेंगे तथा इसके मार्ग–दर्शन से लाभांवित हो सकेंगे।

भाग 3. परिभाषा – (दिनांक 09–11 मई 2025 को रूढ़ीप्रथा पद्दा पड़हा बिसुसेन्दरा 2025, सिसई–भरनो, द्वारा अनुमोदित एवं स्वीकृत अभिलेख Annexure V के अनुसार है) –

(क) **रूढ़ीप्रथा उरांव सामाजिक न्यायपंच** – इसका अर्थ वैसे उरांव परिवार या उरांव परिवार के सदस्यों के रूढ़ीप्रथागत सामाजिक व्यवस्था से है, जो अपनी रूढ़ीप्रथागत सामाजिक व्यवस्था, रीति–रिवाज, परम्परा, संस्कार, संस्कृति, भाषा, लिपि, आस्था–विश्वास इत्यादि के साथ जीवन जी रहे हैं, जो दुनियाँ के विकसित धर्म–सम्प्रदाय से अलग, विशिष्ट तथा स्वतंत्र है।

(ङ) **पद्दा** – एक रूढ़ीप्रथागत उरांव पद्दा (ग्राम) या गांव बसाते समय पूर्वजों ने एक गांव सीमा क्षेत्र में – 1. एक चाःला (सरना), 2. एक कदलेटा (कदलेटा सरना), 3. एक पाट/देशबली या महदनियाँ, 4. एक देबीगुड़ी (गवां देवती), 5. एक चँड़ी (जोंख़ चँड़ी) 6. एक अखड़ा एवं 7. एक धुमकुड़िया (जोंख़ एड़पा सह पेल्लो एड़पा) स्थापित किया। इनमें से 1 से 5 क्रमवाला, गांव में पूजा स्थल के रूप में तथा 6 एवं 7 क्रमवाला सांस्कृतिक स्थल के रूप में सामान्य रूप से गांव में स्थापित रहा है अर्थात एक रूढ़ी–प्रथागत गांव स्थापना के लिए ये स्थल मानक रहे हैं। एक रूढ़ीप्रथागत पद्दा (ग्राम) में कई टोला भी होता है किन्तु उस टोला में 1 से 4 क्रमवाला पूजा स्थल नहीं होता।

(छ) **पद्दा पंच्चपचा** – यहां पद्दा पचईती का अर्थ रूढ़ीप्रथागत ग्रामसभा है। उराँव/कुडुख़ भाषा में ग्राम सभा का अर्थ पद्दा पचईती (बईसकी) है। रूढ़ीप्रथागत उराँव गांव व्यवस्था में गांववासी प्रथागत रूप से अपनी

सामाजिक व्यवस्था, उरांव रीति–रिवाज, भाषा, संस्कार, संस्कृति, परम्परा एवं आस्था–विश्वास के अनुसार अपनी समस्याओं का समाधान करते हैं। रूढ़ी व्यवस्था के अन्तर्गत गांव में पूजा–पाट की जिम्मेदारी गांव के पहान (भूंईहरी पहनई परिवार) द्वारा किया जाता रहा है तथा गांव का स्वशासन व्यवस्था की जिम्मेदारी भूंईहरी महतोई परिवार की हुआ करती रही है।

(झ) **पड़हा** – रूढ़ीप्रथागत उरांव सामाजिक एवं न्यायिक व्यवस्था में गांव/ग्राम से उपर की व्यवस्था को पड़हा व्यवस्था कहा जाता है। यह कई गांव समूह (3, 5, 7, 9, 12, 21, 22, इत्यादि) का सभा (बईसकी) हुआ करती है। जब कभी किसी मामले पर या दो गांव के बीच आपसी विवाद को सुलझाने के लिए पड़हा बईसकी (सभा) किया जाता है, जहां गांव समूह द्वारा निर्णय लिया जाता है। पड़हा के अन्तर्गत जितने भी गांव समूह जुड़े होते हैं उनमें से सभी गांव को एक विशिष्ट जिम्मेदारी सौंपी गई है और वह गांव उसे अपना पद मानते हुए कार्य करता है। जैसे – बे:ल (राजा), देवान (मंत्री), कोटवार, इत्यादि।

(ञ) **पड़हा राजा** – रूढ़ीप्रथागत उरांव सामाजिक एवं न्यायिक व्यवस्था में गांव/ग्राम से उपर की व्यवस्था को पड़हा व्यवस्था कहा जाता है। यह कई गांव समूह (3, 5, 7, 9, 12, 21, 22, इत्यादि) का पचईती (सभा) होता है। इस व्यवस्था में किसी एक गांव को पड़हा राजा (पड़हा बे:ल) का पद मिला हुआ है। इसी तरह किसी दूसरे गांव को पड़हा देवान (पड़हा दीवान) तथा किसी तीसरे गांव को पड़हा कोटवार इत्यादि का पद मिला हुआ है। इस तरह सभी पड़हा गांव को कार्य की जिम्मेदारी के अनुसार पड़हा बैठक के लिए पद निर्धारित है। इन पदों के अनुसार पद ग्रहण के लिए गांव में बईसकी (सभा) करके चयन किया जाता है। इस चयन प्रक्रिया में विवाद उत्पन्न होने पर, अंतिम निर्णय के लिए दैवीय विधि द्वारा पाय चोरगाअ़ना विधि या पाय रेंगवाना विधि से निर्णय लिये जाने की परम्परा है।

(ट) **पड़हा पंच्चपचा (बईसकी)** – उरांव समाज की रूढ़ीगत सामाजिक, प्रशासनिक एवं न्यायिक व्यवस्था है। उरांव समुदाय की उरांव/कुड़ुख़ भाषा में पड़हा का अर्थ – पड़ा नुम पा:ड़ा अरा पड़ा नुम पड़गरआ समझा जाता है। इसका अर्थ है, अपने सामाजिक दायरे में रहकर नाच–गान, जीवन–यापन करें तथा अपने सामाजिक दायरे में ही अपनों के बीच के मन–मुटाव एवं टकराव को दूर करें। पड़हा का तीन मुख्य कार्य हैं – 1. रक्त की शुद्धता बरकरार रखना 2. समाज के अन्दर अनुशासन बनाये रखना है। 3. समाज को बाहरी दबाव से बचाना। इस तरह पड़हा एक गांव समूह की सामाजिक सभा है। इसका (पड़हा क्षेत्र का) सीमांकन पूर्वजों द्वारा स्थापित है तथा पीढ़ी दर पीढ़ी से चला आ रहा है। संख्या की दृष्टि से यह 3 गांव/5 गांव/7 गांव/9 गांव/12 गांव या कहीं–कहीं 21 गांव या 22 गांव का पड़हा समूह है। प्रत्येक पड़हा में एक गांव को पड़हा बेल (पड़हा राजा) तथा एक गांव को पड़हा देवान (पड़हा मंत्री) तथा एक गांव को पड़हा कोटवार एवं अन्य उपाधि तथा एक पड़हा चिन्ह दिया गया है। पड़हा गांव के बीच जब कभी किसी सामाजिक मुद्दे पर पद्दा पंच्चा (गांव की सभा) में निर्णय नहीं हो पाता है, तब पड़हा पंच्चा (पड़हा गांव की सभा) की बैठक होती है और मामले का निष्पादन किया जाता है। इसी तरह यदि किसी व्यक्ति या परिवार द्वारा किसी सामाजिक नियम अथवा मर्यादा भंग करने पर पड़हा सभा द्वारा उन्हें सामाजिक दण्ड भी दिया जाता है और यदि निर्धारित दण्ड को जबरन न मानने पर सामाजिक बहिष्कार जैसा दण्ड का सामना करना पड़ता है।

(ठ) **बेल पंच्चपचा** – इसका अर्थ, पड़हा राजा/पड़हा बेल लोगों की सभा है। जब कभी ग्राम सभा के निर्णय को दूसरी बार सामाजिक व्यवस्था में चुनौती का सामना करना होता है तो कई पड़हा के पड़हा के पड़हा राजा का दल एक स्थान पर सभा बैठकर ग्राम सभा एवं पड़हा पंच्चा के निर्णय का समीक्षा करते हैं और अपना निर्णय देते आये हैं।

(ड) **बिसुसेन्दरा** – यह रूढ़ीजन्य उरांव समुदाय में सर्वोच्च सामाजिक परिषद है। बिसुसेन्दरा का शाब्दिक अर्थ बि से बी (अंडा) एवं बि से बिहनी (बीज) तथा सेन्दरा का तात्पर्य जीवन रक्षा के उपाय के लिए सेन्दरा तक का निर्धारण करना अर्थात अपने वंश–बीज की रक्षा–सुरक्षा करना। कुड़ुख़ भाषा में यह बसा नना गे सेन्दरा कहलाता है। परम्परागत उराँव (कुड़ुख़) समाज में प्रत्येक 12 वर्ष में बैसाख महीने के इंजोरिया पक्ष में राजी बिसुसेन्दरा तथा क्षेत्रीय बिसुसेन्दरा 03 वर्ष में होते रहने की रम्परा रही है। बि = बी, बिहनी, सु = सुसर ननना। सेन्दरा = सोन्दओ अरा रापुड ननना़। बिसुसेंदरा = बी अरा बिहनिन सुसर ननना गे सेन्दरा। इन दिनों कहीं–कहीं पर सामाजिक जरूरत के अनुसार प्रति वर्ष बिसुसेन्दरा का आयोजन किया जा रहा है। बिसुसेन्दरा की एक ईकाई, ज्यूरी ईकाई (JURY UNIT) है, जो **बेल पंच्चा** (पड़हा बेल समूह की सभा) के समय अपना जिम्मेदारी निभाता है। इसके लिए पड़हा बेल (पड़हा राजा), ज्यूरी सदस्य (Jury member) होते हैं। Bisusendra is supreme council of Customary Oraon Tribe and Parha be:l is the Jury member of Bisusendra.दस्तावेज में ग्रामसभा की अध्यक्षता के लिए ग्राम प्रधान के रूप में माहतो/पहान को दिया गया है।

(द) **पंच्चपचा** – पंच्चर गही पचा ओक्कना दरा नेवई ननना बईसकी, ''पंच्च–पचा'' बातार'ई।

भाग 4. – रूढ़ीप्रथागत उराँव आदिवासी न्यायपंच नियमावली कार्यशाला, जिरहुल, भरनो, गुमला में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया :–

प्रस्ताव सं0 1 – दिनांक 09–11 मई 2025 को सम्पन्न, रूढ़ीप्रथा पद्दा पड़हा बिसुसेन्दरा, सिसई–भरनो में प्रस्ताव पारित शब्दवाली परिभाषा में से भाग 3 (क) से (म) तक सभी विषयों पर परिचर्चा हुई और सर्वसहमति से प्रस्ताव को स्वीकृत एवं अनुमोदित किया गया।

प्रस्ताव सं0 2 – 5वीं अनुसूचित क्षेत्र के अन्तर्गत अनेक समुदाय के लोग एक ही गांव में रहते आ रहे हैं। यदि साथ रहने के सिलसिले में, दो अलग समुदाय के बीच का कलह या मतभेद का शिकायत ग्राम सभा के पास आए तो परम्परागत ग्राम सभा अध्यक्ष के ही अध्यक्षता में शिकायत का निपटारा होगा। ऐसे ग्राम में समुदाय के लोग, नियमानुसार ग्रामसभा के सदस्य शामिल रह सकेगे।

प्रस्ताव सं0 3 – अनुसूचित क्षेत्र के अन्तर्गत राजकीय प्रशासन में सामाजिक सहभागिता हेतु हेतु पंचायत समिति में प्रत्येक पड़हा से एक पडहा सहायक अथवा पड़हा प्रतिनिधि के रूप में मनोनित सदस्य सम्मिलित किया जाए। इसके लिए राज्य सरकार पहल करे। पड़हा की ओर से सरकार के समक्ष, समाज की मांग रखी जाए। जिस प्रकार कि पेसा नियमावली 2025 में ग्राम सभा के मदद के लिए प्रत्येक ग्राम में एक सहायक सचिव चयनित करने का प्रावधान है, उसी तरह प्रत्येक पड़हा राजा के मदद के लिए पंचायत समिति में एक पड़हा प्रतिनिधि सम्मिलित किए जाने का प्रावधान हो। इसे महामहीम राज्यपाल एवं राज्य सरकार झारखण्ड नियमावली में स्थान दें।

प्रस्ताव सं0 4 – ग्राम कोष के संचालन हेतु ग्रमसभा द्वारा एक सेमेत का गठन किया जाएगा जो पेसा नियमावली 2025 के अध्याय 8 के अनुसार ग्राम को का देखरेख करेगी। ग्राम कोष संचालन समिति में तीन सदस्य होंगे – 1. अध्यक्ष 2. सचिव 3. कोषाध्यक्ष। इनमें से एक महिला अवश्य रहे। इस विषय पर निर्णय लिया गया कि ग्राम सभा अध्यक्ष ही ग्राम कोष क समिति का अध्यक्ष रहेंगे। ग्राम कोष समिति का सचिव एवं कोषाध्यक्ष का चयन ग्राम सभा द्वारा चयनित किया जाएगा।

अंत में जिरहुल ग्राम के माहतो द्वारा धन्यवाद दिया गया और कार्यशाला समाप्त हुई।

रिपोर्ट, जिरहुल से – श्री रंथू उरांव, सचिव, अद्दी कुड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, झारखण्ड।

17. kurukhtimes.com बेबसाईट का पुनः–प्रस्तुति अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस, दिनांक 8 मार्च 2026 को ''जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विकास मंच'' का प्रथम सम्मेलन, सत्यभारती रांची के सभागार में सम्पन्न हुआ। यह सम्मेलन झारखण्डी भाषा एवं संस्कषति के संरक्षण तथा संवर्धन हेतु झारखण्ड के नवोदित साहित्यकार एवं शोधार्थियों द्वारा आयोजित किया गया था। इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में झारखण्ड ओपन यूनिवर्सिटी के कुलसचिव डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ० दिलीप कुमार साहू उपस्थित थे।

''जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विकास मंच'' के आयोजकों ने ''जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा'' के सभी भाषा के वरिष्ठ प्रतिनिधियों को सलाहकार मण्डली के सदस्य मनोनित करते हुए ससम्मान एक अंग वस्त्र एवं एक सरई का पौधा भेंट किया गया।

सलाहकार समिति के सदस्य गण इस प्रकार हैं –

1. डॉ० मनसिद बड़ाउद – मुंडारी
2. डॉ० के सी टुडू – संताली
3 डॉ० एच.एन सिंह – कुरमाली
4. डॉ० करमचंद्र अहीर – पंचपरगनिया
5. डॉ० नारायण उरांव ''सैन्दा''– कुडुख
6. डॉ० सोनू हस्सा – हो
7. डॉ० बासिल किड़ो – खड़िया
8. श्री महेंद्र नाथ गोस्वामी – खोरठा

नवोदित साहित्यकार एवं शोधार्थियों द्वारा अपने प्रथम सम्मेलन में ही एक अद्भूत कार्य का शुभारंभ किया गया। इस अवसर मंच की ओर से ''झारखण्ड के संत'' विषय पर निबंध प्रतियोगिता करवाया गया, जिसके प्रथम पुरस्कार विजेता गिरिडीह के डा० छोटु प्रसाद बने।

इसी के साथ, वर्तमान डिजिटल युग में खरा उतरने के लिए उरांव समाज के चिंतकों द्वारा विगत एक दशक से बेबसाईट पर कार्य किया जा रहा है। इस अवसर पर माननीय डा0 नारायण उरांव द्वारा बतलाया गया कि दिनांक 21.02.2010 में इसी सत्य भारती रांची के सभागार में tolongsiki.com नामक बेवसाईट का लोकापर्ण किया गया था, जो अभी तक चल रहा है। साथ ही दिनांक 18.12.2020 को kurukhtimes.com नामक बेबसाईट का लोकार्पण हुआ, जिसका रिवाइज्ड वर्जन का पुनः–प्रस्तुति सह लोकार्पण, दिनांक 8 मार्च को नवोदित साहित्यकार एवं शोधार्थियों द्वारा आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह की उपस्थिति में किया गया। इस बेबसाईट में TRL नामक एक ब्लॉग है जिसमें कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा में लेख या विचार प्रकाशन हेतु भेज सकते हैं। कुड़ुख़ टाइम्स, त्रैमासिक पत्रिका (अंक 9) सभी अतिथियों को भेंट स्वरूप दिया गई। कार्यक्रम में सभी सम्मानित सदस्यों द्वारा अपने विचार एवं सुझाव व्यक्त किये गए।

झारखंड के प्रमुख संत विषयक निबंध प्रतियोगिता के विजेता हुए पुरस्कृत

जागरण संवाददाता, रांची : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विकास मंच रांची ने रविवार को सत्य भारती सभागार में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं का प्रथम सम्मेलन आयोजित किया। मुख्य अतिथि झारखंड स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी के कुलसचिव डा. जितेंद्र कुमार सिंह थे, जबकि विशिष्ट अतिथि परीक्षा नियंत्रक डा. दिलीप कुमार साहू थे। सम्मेलन में झारखंडी भाषाओं के प्रतिष्ठित विद्वानों में बासिल किड़ो, डा. मनसिद्द बदायउद, डा. केसी टुडू, सोनू हेस्सा, डा. नारायण उरांव, डा. करमचंद्र अहीर तथा डा. एचएन सिंह उपस्थित रहे। वक्ताओं ने झारखंडी भाषाओं के विकास और संवर्द्धन पर जोर दिया। यूनिवर्सिटी और कालेजों में झारखंडी भाषाओं के रिक्त पदों को शीघ्र भरने की आवश्यकता बताई। मंच के सचिव सुकेशी कर्मकार और विकी मिंज ने कहा कि झारखंडी भाषाओं के विद्वानों को राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया जाना चाहिए, जिससे इन भाषाओं के संरक्षण और विकास को नई गति मिल सके। इस अवसर पर सत प्रकाशन और मंच के संयुक्त प्रयास से आयोजित झारखंड के प्रमुख संत विषय पर निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में गिरिडीह के डा. छोटू प्रसाद को प्रथम पुरस्कार के रूप में 5100 रुपये तथा पांकी के पंकज प्रसून को द्वितीय पुरस्कार के रूप में 3100 रुपए एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

सम्मेलन मे शामिल राज्य के प्रसिद्ध क्षेत्रीय भाषा साहित्यकार ● सौ.स्वयं

मंच संचालन, विक्की, प्रियंका द्वारा किया गया। रवि वर्मा द्वारा जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विकास मंच के उद्देश्यों में प्रकाष डाला। अंत में शिवशंकर उराँव धन्यवाद ज्ञापन दिया। मंच के सभी सदस्य उपस्थित रहे, जिनमें से सोनी कुमारी, सकेषी कर्मकार, रिता, सुरेखा लकड़ा, अरुण प्रमाणिक, निलफोन, सत्यनारायण मुंडा, जनजाति एवं क्षेत्रीय भाषा छात्र एवं षोधायर्थी गण उपस्थित रहे। *****